CBSE Class 12 Hindi Core Question Paper 2015 with Solution PDF-Set 2/1

Question Paper with Solutions

Conducted by the Central Board of Secondary Education (CBSE)

निर्धारित समय: 3 Hours **अधिकतम अंक: 100**

सामान्य निर्देश

(i) इस प्रश्न-पत्र में कुल 14 प्रश्न हैं। सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।
(ii) प्रश्न 4, 6, 7, 8, 9, 11 में आंतरिक विकल्प दिया गया है; ऐसे प्रश्नों में केवल एक विकल्प का उत्तर दीजिए।
(iii) प्रश्नों में दिए गए निर्देशों का पालन करते हुए उत्तर लिखिए।
(iv) प्रत्येक प्रश्न के अंक उसके सामने दर्शाए गए हैं।

1. जब समाचार-पत्रों में सर्वसाधारण के लिए कोई सूचना प्रकाशित की जाती है तो उसको विज्ञापन कहते हैं । यह सूचना नौकरियों से सम्बन्धित हो सकती है, खाली मकान को किराये पर उठाने के सम्बन्ध में हो सकती है या किसी औषधि के प्रचार से सम्बन्धित हो सकती है । कुछ लोग विज्ञापन के आलोचक हैं । वे इसे निरर्थक मानते हैं । उनका मानना है कि यदि कोई वस्तु यथार्थ रूप में अच्छी है तो वह बिना किसी विज्ञापन के ही लोगों के बीच लोकप्रिय हो जाएगी जबकि ख़राब वस्तुएँ विज्ञापन की सहायता पाकर भी भंडाफोड़ होने पर बहुत दिनों तक टिक नहीं पाएँगीं । परन्तु लोगों की यह सोच ग़लत है ।

आज के युग में मानव का प्रचार-प्रसार का दायरा व्यापक हो चुका है । अतः विज्ञापनों का होना अनिवार्य हो जाता है । किसी अच्छी वस्तु की वास्तविकता से परिचय पाना आज के विशाल संसार में विज्ञापन के बिना नितान्त असंभव है । विज्ञापन ही वह शक्तिशाली माध्यम है जो हमारी ज़रूरत की वस्तुएँ प्रस्तुत करता है, उनकी माँग बढ़ाता है और अंततः हम उन्हें जुटाने चल पड़ते हैं । यदि कोई व्यक्ति या कम्पनी किसी वस्तु का निर्माण करती है, उसे उत्पादक कहा जाता है । उन वस्तुओं और सेवाओं को ख़रीदने वाला उपभोक्ता कहलाता है । इन दोनों को जोड़ने का कार्य विज्ञापन करता है । वह उत्पादक को उपभोक्ता के सम्पर्क में लाता है तथा माँग और पूर्ति में संतुलन स्थापित करने का प्रयत्न करता है ।

पुराने ज़माने में किसी वस्तु की अच्छाई का विज्ञापन मौखिक तरीक़े से होता था । काबुल का मेवा, कश्मीर की ज़री का काम, दक्षिण भारत के मसाले आदि वस्तुओं की प्रसिद्धि मौखिक रूप से होती थी । उस समय आवश्यकता भी कम होती थी तथा लोग किसी वस्तु के अभाव की तीव्रता का अनुभव नहीं करते थे । आज समय तेज़ी का है । संचार-क्रांति ने ज़िन्दगी को स्पीड दे दी है । मनुष्य की आवश्यकताएँ बढ़ती जा रही हैं । इसलिए विज्ञापन मानव-जीवन की अनिवार्यता बन गया है ।

निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए : [15 अंक]

1(क). गद्यांश के लिए उपयुक्त शीर्षक दीजिए । [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- उपयुक्त शीर्षक गद्यांश के मुख्य विषय और लेखक के केंद्रीय विचार को संक्षेप में व्यक्त करता है।
- उत्तर में प्रश्न की माँग के अनुसार संबंधित तथ्य स्पष्ट और क्रमबद्ध रूप में प्रस्तुत किए जाते हैं।

चरण 1: पहले पक्ष की पहचान गद्यांश में विज्ञापन की परिभाषा, उसके पक्ष-विपक्ष तथा उत्पादक और उपभोक्ता को जोड़ने की भूमिका समझाई गई है। अंतिम अनुच्छेद में विज्ञापन को मानव-जीवन की अनिवार्यता बताया गया है।

चरण 2: संबंधित तथ्य और व्याख्या शीर्षक के लिए किसी एक उदाहरण, जैसे नौकरी अथवा मकान की सूचना, को चुनना उचित नहीं होगा। पूरे गद्यांश का विषय विज्ञापन की उपयोगिता और आज के जीवन में उसका बढ़ता महत्त्व है।

चरण 3: निष्कर्ष उपयुक्त शीर्षक : विज्ञापन का महत्त्व।

त्वरित सुझाव: शीर्षक चुनते समय अंतिम निष्कर्ष और पूरे गद्यांश के साझा विषय को मिलाकर देखें।

1(ख). विज्ञापन किसे कहते हैं ? वह मानव जीवन का अनिवार्य अंग क्यों माना जाता है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- परिभाषा का उत्तर पहले अनुच्छेद से और अनिवार्यता का कारण दूसरे तथा अंतिम अनुच्छेद से मिलता है।
- उत्तर में प्रश्न की माँग के अनुसार संबंधित तथ्य स्पष्ट और क्रमबद्ध रूप में प्रस्तुत किए जाते हैं।

चरण 1: पहले पक्ष की पहचान समाचार-पत्रों में सर्वसाधारण के लिए प्रकाशित सूचना को विज्ञापन कहते हैं। यह सूचना नौकरी, किराए पर दिए जाने वाले मकान अथवा किसी औषधि के प्रचार से संबंधित हो सकती है। इस प्रकार इसका उद्देश्य लोगों तक उपयोगी जानकारी पहुँचाना है।

चरण 2: संबंधित तथ्य और व्याख्या आज संसार में प्रचार-प्रसार का क्षेत्र व्यापक हो गया है और मनुष्य की आवश्यकताएँ निरंतर बढ़ रही हैं। विज्ञापन आवश्यक वस्तुओं और सेवाओं की जानकारी देता है तथा उत्पादक को उपभोक्ता से जोड़ता है। इसलिए केवल मौखिक

प्रसिद्धि पर निर्भर रहना पर्याप्त नहीं है; विज्ञापन मानव-जीवन का अनिवार्य अंग बन गया है।

चरण 3: निष्कर्ष सार्वजनिक रूप से प्रकाशित सूचना विज्ञापन है। व्यापक संसार और बढ़ती आवश्यकताओं के बीच उपयोगी वस्तुओं की जानकारी उपलब्ध कराने के कारण वह जीवन का अनिवार्य अंग है।

त्वरित सुझाव: दो हिस्सों वाले प्रश्न में पहले परिभाषा लिखें और फिर गद्यांश से अनिवार्यता का कारण दें।

1(ग). उत्पादक किसे कहते हैं ? उत्पादक-उपभोक्ता सम्बन्धों को विज्ञापन कैसे प्रभावित करता है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- गद्यांश में उत्पादक निर्माण करने वाला तथा उपभोक्ता वस्तुएँ और सेवाएँ खरीदने वाला बताया गया है।
- उत्तर में प्रश्न की माँग के अनुसार संबंधित तथ्य स्पष्ट और क्रमबद्ध रूप में प्रस्तुत किए जाते हैं।

चरण 1: पहले पक्ष की पहचान जो व्यक्ति या कंपनी किसी वस्तु का निर्माण करती है, उसे उत्पादक कहते हैं। इसके विपरीत उन वस्तुओं और सेवाओं को खरीदने वाला उपभोक्ता कहलाता है। दोनों की भूमिकाएँ अलग हैं, पर उनकी आवश्यकताएँ एक-दूसरे से जुड़ी हुई हैं।

चरण 2: संबंधित तथ्य और व्याख्या विज्ञापन इन दोनों के बीच संपर्क स्थापित करता है। इससे उपभोक्ता को उत्पादक की वस्तु और उसकी उपयोगिता की जानकारी मिलती है तथा वस्तु की माँग बढ़ती है। उत्पादक अपने संभावित खरीदारों तक पहुँच पाता है। इस प्रकार विज्ञापन उत्पादक और उपभोक्ता को जोड़कर माँग और पूर्ति में संतुलन स्थापित करने का प्रयत्न करता है।

चरण 3: निष्कर्ष वस्तु बनाने वाला व्यक्ति या कंपनी उत्पादक है। विज्ञापन उत्पादक और उपभोक्ता के बीच संपर्क का माध्यम बनता है तथा माँग और पूर्ति में संतुलन लाने का प्रयत्न करता है।

त्वरित सुझाव: उत्पादक को निर्माता और उपभोक्ता को खरीदार के रूप में पहचानकर विज्ञापन की जोड़ने वाली भूमिका लिखें।

1(घ). किसी विज्ञापन का उद्देश्य क्या होता है ? जीवन में इसकी उपयोगिता पर प्रकाश डालिए । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- उद्देश्य बताते समय वस्तु की जानकारी, माँग में वृद्धि और उत्पादक-उपभोक्ता के संपर्क को आधार बनाना चाहिए।
- उत्तर में प्रश्न की माँग के अनुसार संबंधित तथ्य स्पष्ट और क्रमबद्ध रूप में प्रस्तुत किए जाते हैं।

चरण 1: पहले पक्ष की पहचान विज्ञापन का उद्देश्य वस्तुओं और सेवाओं की जानकारी लोगों तक पहुँचाना, उनकी विशेषताओं से परिचित कराना और उनकी माँग बढ़ाना है। गद्यांश के अनुसार यह हमारी आवश्यकता की वस्तुएँ हमारे सामने प्रस्तुत करता है, जिससे हम उन्हें प्राप्त करने के लिए प्रेरित होते हैं।

चरण 2: संबंधित तथ्य और व्याख्या जीवन में इसकी उपयोगिता इसलिए है कि विशाल संसार में हर अच्छी वस्तु की जानकारी अपने आप सब लोगों तक नहीं पहुँच सकती। विज्ञापन नौकरी, किराए के मकान तथा औषधि जैसी उपयोगी सूचनाएँ पहुँचाता है। वह उत्पादक और उपभोक्ता को संपर्क में लाता है और माँग तथा पूर्ति में संतुलन बनाने का प्रयत्न करता है।

चरण 3: निष्कर्ष विज्ञापन जानकारी और प्रचार द्वारा माँग बढ़ाता है। उपयोगी वस्तुओं तथा सेवाओं का परिचय देकर और उत्पादक को उपभोक्ता से जोड़कर वह जीवन में उपयोगी बनता है।

त्वरित सुझाव: उद्देश्य में विज्ञापन क्या करता है और उपयोगिता में उससे लोगों को क्या लाभ होता है, यह स्पष्ट करें।

1(ङ). पुराने समय में विज्ञापन का तरीक़ा क्या था ? वर्तमान तकनीकी युग ने इसे किस प्रकार प्रभावित किया है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- पुराने और वर्तमान समय की तुलना गद्यांश के अंतिम अनुच्छेद में दी गई है।
- उत्तर में प्रश्न की माँग के अनुसार संबंधित तथ्य स्पष्ट और क्रमबद्ध रूप में प्रस्तुत किए जाते हैं।

चरण 1: पहले पक्ष की पहचान पुराने समय में वस्तुओं की अच्छाई का प्रचार मौखिक रूप से होता था। लोग आपस में बातचीत करके वस्तुओं की प्रसिद्धि फैलाते थे। काबुल का मेवा, कश्मीर की ज़री का काम और दक्षिण भारत के मसाले इसी प्रकार प्रसिद्ध हुए थे। उस समय लोगों की आवश्यकताएँ भी अपेक्षाकृत कम थीं।

चरण 2: संबंधित तथ्य और व्याख्या वर्तमान तकनीकी युग में संचार-क्रांति ने जीवन की गति तेज कर दी है और प्रचार-प्रसार का क्षेत्र व्यापक हो गया है। मनुष्य की आवश्यकताएँ बढ़ने से वस्तुओं की जानकारी अधिक लोगों तक पहुँचाना आवश्यक हो गया है। फलतः विज्ञापन का महत्त्व और उसकी आवश्यकता बढ़ी है तथा वह मानव-जीवन का अनिवार्य अंग बन गया है।

चरण 3: निष्कर्ष पहले विज्ञापन मौखिक प्रचार पर आधारित था। संचार-क्रांति, तेज जीवन और बढ़ती आवश्यकताओं ने वर्तमान युग में विज्ञापन के प्रसार और महत्त्व को बढ़ा दिया है।

त्वरित सुझाव: तुलना में पहले मौखिक प्रचार का उदाहरण दें, फिर संचार-क्रांति और बढ़ती आवश्यकताओं का प्रभाव लिखें।

1(च). विज्ञापन के आलोचकों के विज्ञापन के सन्दर्भ में क्या विचार हैं ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- यह प्रश्न आलोचकों का विचार पूछता है; उनके मत और लेखक के मत को अलग पहचानना आवश्यक है।
- उत्तर में प्रश्न की माँग के अनुसार संबंधित तथ्य स्पष्ट और क्रमबद्ध रूप में प्रस्तुत किए जाते हैं।

चरण 1: पहले पक्ष की पहचान विज्ञापन के आलोचक उसे निरर्थक मानते हैं। उनका विश्वास है कि कोई वस्तु वास्तव में अच्छी है तो वह अपने गुणों के कारण ही लोगों के बीच लोकप्रिय हो जाएगी। अच्छी वस्तु को प्रसिद्ध करने के लिए अलग से विज्ञापन की आवश्यकता नहीं है।

चरण 2: संबंधित तथ्य और व्याख्या उनका दूसरा तर्क है कि खराब वस्तु विज्ञापन का सहारा लेकर कुछ समय तक बिक सकती है, किंतु उसकी वास्तविकता खुलने पर वह लंबे समय तक नहीं टिक सकती। इस प्रकार वे वस्तु की सफलता का आधार उसकी गुणवत्ता को मानते हैं। गद्यांश का लेखक इस सोच को गलत बताता है, पर प्रश्न के उत्तर में आलोचकों के यही दोनों तर्क प्रमुख हैं।

चरण 3: निष्कर्ष आलोचकों के अनुसार अच्छी वस्तु बिना विज्ञापन के लोकप्रिय हो जाती है और खराब वस्तु की असलियत खुल जाने पर विज्ञापन भी उसे अधिक समय तक टिकाए नहीं रख सकता; इसलिए वे विज्ञापन को निरर्थक मानते हैं।

त्वरित सुझाव: आलोचकों का उत्तर लिखते समय अच्छी वस्तु और खराब वस्तु के बारे में उनके दोनों तर्क अवश्य दें।

1(छ). आज की भाग-दौड़ की ज़िन्दगी में विज्ञापन का महत्त्व उदाहरण देकर समझाइए । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- प्रश्न के उत्तर में तेज जीवन, बढ़ती आवश्यकताओं और गद्यांश में दिए उदाहरण को जोड़ना चाहिए।
- उत्तर में प्रश्न की माँग के अनुसार संबंधित तथ्य स्पष्ट और क्रमबद्ध रूप में प्रस्तुत किए जाते हैं।

चरण 1: पहले पक्ष की पहचान आज संचार-क्रांति ने जीवन की गति तेज कर दी है। मनुष्य की आवश्यकताएँ बढ़ रही हैं और प्रचार-प्रसार का क्षेत्र भी बहुत व्यापक हो गया है। ऐसे में हर उपयोगी वस्तु या सेवा की जानकारी लोगों को अपने आप मिलना कठिन है। विज्ञापन आवश्यक सूचनाएँ उनके सामने लाकर उन्हें अपनी जरूरतें पूरी करने में सहायता देता है।

चरण 2: संबंधित तथ्य और व्याख्या उदाहरण के लिए नौकरी की सूचना का विज्ञापन काम चाहने वाले व्यक्ति को अवसर से परिचित कराता है। इसी तरह खाली मकान को किराए पर देने की सूचना मकान खोजने वाले को उपयोगी जानकारी देती है। ये उदाहरण गद्यांश में उल्लिखित सूचनाओं पर आधारित हैं। विज्ञापन लोगों को आवश्यकता की वस्तुओं तथा सेवाओं से जोड़ता है, इसलिए भाग-दौड़ के जीवन में उसका महत्त्व बढ़ गया है।

चरण 3: निष्कर्ष तेज गति वाले वर्तमान जीवन में विज्ञापन आवश्यक वस्तुओं और सेवाओं की जानकारी देता है। नौकरी और किराए के मकान के विज्ञापन इसके उपयोगी उदाहरण हैं।

त्वरित सुझाव: उदाहरण गद्यांश में उल्लिखित नौकरी या किराए के मकान से लें और उसे सूचना की उपयोगिता से जोड़ें।

1(ज). उपसर्ग-प्रत्यय पृथक् कीजिए :

अनिवार्य, वास्तविकता । [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- मूल शब्द से पहले जुड़ा शब्दांश उपसर्ग और उसके अंत में जुड़ा शब्दांश प्रत्यय होता है।
- उत्तर में प्रश्न की माँग के अनुसार संबंधित तथ्य स्पष्ट और क्रमबद्ध रूप में प्रस्तुत किए जाते हैं।

चरण 1: पहले पक्ष की पहचान अनिवार्य शब्द में निषेध का अर्थ देने वाला अ उपसर्ग है। इसे अ + निवार्य के रूप में अलग किया जाता है। यहाँ आरंभ में जुड़ा अ शब्द के अर्थ को प्रभावित करता है, इसलिए इसे प्रत्यय नहीं कहा जाएगा।

चरण 2: संबंधित तथ्य और व्याख्या वास्तविकता शब्द वास्तविक + ता से बना है। इसमें ता प्रत्यय है, जो विशेषण वास्तविक से भाववाचक संज्ञा बनाता है। प्रत्यय की पहचान शब्द के अंतिम भाग से की जाती है।

चरण 3: निष्कर्ष अनिवार्य : अ + निवार्य; उपसर्ग अ। वास्तविकता : वास्तविक + ता; प्रत्यय ता।

त्वरित सुझाव: उपसर्ग के लिए शब्द की शुरुआत और प्रत्यय के लिए अंत देखें; वास्तविकता में ता भाव बताता है।

1(झ). मिश्र वाक्य में बदलिए :

'वस्तुओं और सेवाओं को ख़रीदने वाला उपभोक्ता कहलाता है ।' [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- मिश्र वाक्य में एक प्रधान उपवाक्य और उस पर आश्रित एक उपवाक्य होता है।
- संज्ञा की विशेषता बताने वाले पदबंध को संबंधवाचक उपवाक्य में बदला जा सकता है।

चरण 1: मूल वाक्य का पदबंध पहचानना मूल वाक्य में 'वस्तुओं और सेवाओं को ख़रीदने वाला' पदबंध व्यक्ति की पहचान बताता है। इसे बदलते समय वस्तुओं और सेवाओं की खरीद तथा उपभोक्ता कहलाने का मूल अर्थ सुरक्षित रखना है।

चरण 2: संबंधवाचक उपवाक्य बनाना 'ख़रीदने वाला' के स्थान पर 'जो वस्तुओं और सेवाओं को ख़रीदता है' आश्रित उपवाक्य बनेगा। इसके साथ 'वह उपभोक्ता कहलाता है' प्रधान उपवाक्य जोड़ेंगे। यहाँ 'जो' और 'वह' दोनों उपवाक्यों को अर्थ की दृष्टि से जोड़ते हैं।

चरण 3: निष्कर्ष जो वस्तुओं और सेवाओं को ख़रीदता है, वह उपभोक्ता कहलाता है।

त्वरित सुझाव: 'करने वाला' जैसे पदबंध को 'जो ... करता है' में बदलकर उसके साथ प्रधान उपवाक्य जोड़िए।

2. नीड़ का निर्माण फिर-फिर
नेह का आह्वान फिर-फिर
वह उठी आँधी कि नभ में
छा गया सहसा अँधेरा
धूलि-धूसर बादलों ने
भूमि को इस भाँति घेरा,
रात-सा दिन हो गया फिर
रात आई और काली,
लग रहा था अब न होगा,
इस निशा का फिर सवेरा,
रात के उत्पात-भय से
भीत जन-जन, भीत कण-कण
किंतु प्राची से उषा की
मोहिनी मुसकान फिर-फिर ।
नीड़ का निर्माण फिर-फिर
नेह का आह्वान फिर-फिर

निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए : [5 अंक]

2(क). आँधी तथा बादल किसके प्रतीक हैं ? इनके क्या परिणाम होते हैं ? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- काव्य के प्राकृतिक बिंब मनुष्य के जीवन की स्थितियों के प्रतीक बन सकते हैं।
- प्रतीक का अर्थ उसके साथ आए प्रभावों और पूरे काव्यांश के संदर्भ से समझना चाहिए।

चरण 1: प्रतीकों की पहचान आँधी तथा धूलि-धूसर बादल जीवन में आने वाली विपत्तियों, संकटों और बाधाओं के प्रतीक हैं। इनसे छाया अँधेरा निराशा और आशंका की स्थिति को व्यक्त करता है।

चरण 2: परिणाम समझना आँधी और बादलों के कारण प्रकाश ढक जाता है तथा दिन भी रात जैसा लगने लगता है। इसी प्रकार विपत्तियाँ जीवन की शांति और आशा को नष्ट करती हैं; मनुष्य भयभीत होकर सोचने लगता है कि शायद दुखों का अंत कभी नहीं होगा। 'भीत जन-जन, भीत कण-कण' इसी व्यापक भय को बताता है।

चरण 3: निष्कर्ष आँधी और बादल जीवन की विपत्तियों के प्रतीक हैं। इनके कारण चारों ओर निराशा, भय और अंधकार छा जाता है तथा आशा का अंत होता प्रतीत होता है।

त्वरित सुझाव: प्रतीक पूछे जाने पर प्राकृतिक वस्तु का नाम दोहराने के बजाय उससे व्यक्त जीवन की स्थिति लिखिए।

2(ख). कवि निर्माण का आह्वान क्यों करता है ? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- काव्यांश का केंद्रीय संदेश विनाश के बाद फिर से सृजन करना है।
- 'फिर-फिर' की पुनरावृत्ति निरंतर प्रयत्न और आशा पर बल देती है।

चरण 1: विनाश की पृष्ठभूमि देखना आँधी और अंधकार से जन-जीवन भयभीत है। ऐसी विपरीत परिस्थितियाँ मनुष्य को निराश करके उसके प्रयास रोक सकती हैं। लेकिन पूर्व दिशा से आती उषा बताती है कि यह अंधकार स्थायी नहीं है।

चरण 2: आह्वान का उद्देश्य स्पष्ट करना कवि चाहता है कि मनुष्य विपत्तियों से हारकर निष्क्रिय न हो। वह उजड़े जीवन को सँवारे, प्रेम और सहयोग का संबंध फिर स्थापित करे तथा नए उत्साह से निर्माण करे। 'नीड़ का निर्माण फिर-फिर' और 'नेह का आह्वान फिर-फिर' इसी पुनर्निर्माण तथा प्रेम की प्रेरणा देते हैं।

चरण 3: निष्कर्ष कवि निर्माण का आह्वान इसलिए करता है कि मनुष्य विनाश और विपत्तियों से निराश न होकर आशा, प्रेम और साहस के साथ जीवन का पुनर्निर्माण करे।

त्वरित सुझाव: उत्तर में निर्माण के साथ प्रेम और पुनः प्रयास का उल्लेख कीजिए; ये दोनों आवर्ती पंक्तियों में साथ आए हैं।

2(ग). कवि किस बात से भयभीत है और क्यों ? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कवि की मनःस्थिति समझने के लिए संबंधित पंक्तियों का सहारा लिया जाता है।
- बाहरी अंधकार यहाँ जीवन की निराशा और भविष्य की आशंका को भी व्यक्त करता है।

चरण 1: भय की स्थिति पहचानना तेज आँधी उठने पर धूल से भरे बादल आकाश और धरती को घेर लेते हैं। दिन रात जैसा हो जाता है और उसके बाद आने वाली रात और भी काली लगती है। यह वातावरण सबको भयभीत कर देता है।

चरण 2: भय का कारण बताना कवि को आशंका है कि यह भीषण अंधकार कभी समाप्त नहीं होगा और फिर सवेरा नहीं आएगा। 'लग रहा था अब न होगा, इस निशा का फिर सवेरा' इस भय का सीधा आधार है। जीवन के स्तर पर यह विपत्तियों के कभी न मिटने और आशा के फिर न लौटने का भय है।

चरण 3: निष्कर्ष कवि रात के भीषण अंधकार और उत्पात से भयभीत है, क्योंकि उसे लगता है कि इस रात का कभी सवेरा नहीं होगा और विपत्तियाँ समाप्त नहीं होंगी।

त्वरित सुझाव: भय का कारण लिखते समय 'इस निशा का फिर सवेरा' वाली पंक्ति से उत्तर का संबंध स्थापित कीजिए।

2(घ). उषा की मुस्कान मानव-मन को क्या प्रेरणा देती है ? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- उषा का प्रकाश अंधकार के अंत और नई आशा का प्रतीक है।
- काव्यांश की अंतिम पंक्तियाँ विपत्ति के बाद फिर प्रयत्न करने का संदेश देती हैं।

चरण 1: उषा का प्रसंग समझना अत्यंत काली रात के बाद पूर्व दिशा से उषा की मोहक मुसकान दिखाई देती है। यह दृश्य पहले व्यक्त इस आशंका को दूर करता है कि शायद इस रात का सवेरा कभी नहीं होगा।

चरण 2: मानव-मन की प्रेरणा स्पष्ट करना उषा मनुष्य को विश्वास दिलाती है कि संकट और निराशा स्थायी नहीं हैं। इसलिए उसे धैर्य, साहस और आशा बनाए रखनी चाहिए तथा कठिनाइयों के बाद फिर से जीवन का निर्माण करना चाहिए। 'नीड़ का निर्माण फिर-फिर' इस प्रेरणा को कर्म और पुनः प्रयास से जोड़ता है।

चरण 3: निष्कर्ष उषा की मुस्कान मानव-मन को निराशा छोड़कर आशावान रहने, संकटों का साहस से सामना करने और नए उत्साह से पुनर्निर्माण करने की प्रेरणा देती है।

त्वरित सुझाव: उषा का अर्थ केवल सुबह न लिखें; अंधकार के बाद लौटती आशा और नए प्रयास की प्रेरणा भी स्पष्ट करें।

2(ङ). 'रात आई और काली' का आशय स्पष्ट कीजिए । [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- पंक्ति का आशय उसके पूर्वापर संदर्भ और प्रतीकात्मक अर्थ को जोड़कर स्पष्ट किया जाता है।
- अंधकार की बढ़ती गहनता यहाँ दुख और निराशा के बढ़ते प्रभाव की सूचक है।

चरण 1: प्रत्यक्ष अर्थ समझना आँधी और धूलि-धूसर बादलों ने दिन में ही अंधकार फैला दिया था। उसके बाद वास्तविक रात आई तो अँधेरा पहले से भी अधिक घना हो गया। 'और काली' अंधकार की इसी बढ़ती तीव्रता को बताता है।

चरण 2: भावार्थ स्पष्ट करना पंक्ति संकेत करती है कि जीवन में कभी एक विपत्ति के बाद दूसरी विपत्ति आ जाती है और दुख अधिक गहरे हो जाते हैं। इससे मनुष्य की निराशा और भय बढ़ते हैं। आगे 'अब न होगा ... फिर सवेरा' की आशंका बताती है कि इस घने अंधकार ने आशा को भी ढक लिया है।

चरण 3: निष्कर्ष 'रात आई और काली' का आशय है कि पहले से विद्यमान संकट और निराशा और भी गहरे हो गए; विपत्तियों की तीव्रता बढ़ने से जीवन में घोर भय और अंधकार छा गया।

त्वरित सुझाव: आशय में अंधकार का दृश्य बताने के बाद बढ़ते संकट और गहराती निराशा का भाव भी लिखिए।

3(क). निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर निबन्ध लिखिए :

राजनीति और धर्म [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- निबंध में विषय का परिचय, तर्कपूर्ण विवेचन और स्पष्ट उपसंहार होना चाहिए।
- धर्म के मानवीय मूल्यों और संकीर्ण सांप्रदायिकता के बीच अंतर करके राजनीति से उनका संबंध समझाना आवश्यक है।

चरण 1: विषय की रूपरेखा भूमिका में राजनीति को सार्वजनिक जीवन के संचालन और धर्म को नैतिक आचरण से जोड़ेंगे। मुख्य भाग में लोककल्याण, सत्य, करुणा और सेवा की उपयोगिता बताएँगे। फिर धर्म के नाम पर वोट माँगने, भेदभाव और हिंसा के दुष्परिणाम रखेंगे। अंत में समान अधिकार, धार्मिक स्वतंत्रता और जवाबदेह शासन का समर्थन करेंगे।

चरण 2: पूर्ण आदर्श निबंध राजनीति और धर्म

राजनीति और धर्म मानव-जीवन को प्रभावित करने वाली दो महत्त्वपूर्ण शक्तियाँ हैं। राजनीति समाज और राज्य की व्यवस्था चलाती है, जबकि धर्म मनुष्य को उचित आचरण की प्रेरणा देता है। इन दोनों का उद्देश्य यदि मानव-कल्याण हो तो समाज में न्याय, शांति और सहयोग बढ़ सकते हैं।

धर्म का व्यापक अर्थ किसी एक पूजा-पद्धति तक सीमित नहीं है। सत्य, करुणा, अहिंसा, सेवा और ईमानदारी उसके मूल तत्त्व हैं। राजनीति में इन मूल्यों की आवश्यकता है। सार्वजनिक पद पर बैठे व्यक्ति को स्वार्थ से ऊपर उठकर जनता की सेवा करनी चाहिए। गरीबों की सहायता, कमजोरों की सुरक्षा और सबके लिए अवसर देना शासन का कर्तव्य है। नैतिकता से जुड़ी राजनीति जनता का विश्वास प्राप्त करती है।

समस्या तब उत्पन्न होती है जब धर्म को सत्ता प्राप्त करने का साधन बना लिया जाता है। धार्मिक भावनाएँ भड़काकर वोट माँगना, किसी समुदाय को दूसरे का शत्रु बताना और आस्था के नाम पर हिंसा को उचित ठहराना समाज को बाँटता है। इससे शिक्षा, रोजगार, स्वास्थ्य और विकास जैसे वास्तविक प्रश्न पीछे छूट जाते हैं। संकीर्ण सांप्रदायिकता धर्म के मानवीय स्वरूप को भी क्षति पहुँचाती है।

भारत अनेक धर्मों और संस्कृतियों का देश है। यहाँ प्रत्येक नागरिक को अपनी आस्था मानने और उसका पालन करने की स्वतंत्रता है। राज्य का दायित्व है कि सभी नागरिकों के साथ समान व्यवहार करे। धर्मनिरपेक्षता का अर्थ धर्म से घृणा नहीं, बल्कि शासन में किसी धर्म का पक्ष न लेना और सबकी स्वतंत्रता की रक्षा करना है। कानून तथा सार्वजनिक नीतियों का आधार संविधान और नागरिक हित होना चाहिए।

नागरिकों को भी विवेकपूर्ण भूमिका निभानी होगी। उन्हें नेताओं का मूल्यांकन उनके कार्य, नीतियों और ईमानदारी के आधार पर करना चाहिए। धार्मिक पहचान के कारण किसी की योग्यता या अधिकार कम नहीं हो जाते। संवाद, सहिष्णुता और परस्पर सम्मान से सामाजिक एकता मजबूत होती है।

इस प्रकार राजनीति को धर्म के नैतिक मूल्यों से प्रेरणा मिलनी चाहिए। साथ ही धार्मिक भेदभाव और संकीर्णता को शासन से दूर रखना आवश्यक है। जब सत्ता सेवा का माध्यम बनेगी और आस्था मानवता का सम्मान सिखाएगी, तभी राजनीति तथा धर्म समाज के कल्याण में योगदान देंगे।

चरण 3: निष्कर्ष राजनीति में सत्य, सेवा और न्याय जैसे नैतिक मूल्य आवश्यक हैं। संविधान पर आधारित निष्पक्ष शासन तथा सभी आस्थाओं के सम्मान से ही लोकतंत्र और सामाजिक एकता सुरक्षित रह सकते हैं।

त्वरित सुझाव: निबंध में नैतिक मूल्यों और सांप्रदायिक राजनीति का अंतर स्पष्ट करके हर अनुच्छेद को मुख्य विषय से जोड़ें।

3(ख). निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर निबन्ध लिखिए :

मेरा प्रिय खेल फुटबॉल [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- निबंध में विषय का परिचय, विचारों का क्रमबद्ध विस्तार और सार्थक उपसंहार होता है। प्रिय खेल के बारे में लिखते समय व्यक्तिगत रुचि के साथ उसके नियमों, लाभों और खेलभावना को जोड़ना चाहिए।
- भाषा सरल, प्रभावपूर्ण और विषयानुकूल होनी चाहिए। शीर्षक के अनुरूप फुटबॉल की चर्चा केंद्र में रहे और प्रत्येक अनुच्छेद एक मुख्य विचार को विकसित करे।

चरण 1: रूपरेखा और प्रस्तुति आरंभ में फुटबॉल के प्रति अपनी रुचि का कारण बताएँ। इसके बाद खेल की सामान्य व्यवस्था, शारीरिक और मानसिक लाभ तथा अपने अनुभव का वर्णन करें। अंत में खेलभावना और नियमित अभ्यास के महत्त्व पर विचार रखें। नीचे दिया गया निबंध इस क्रम में एक पूर्ण नमूना उत्तर है।

चरण 2: पूरा नमूना निबंध **मेरा प्रिय खेल फुटबॉल**

खेल जीवन में उत्साह, स्वास्थ्य और अनुशासन लाते हैं। मुझे अनेक खेल अच्छे लगते हैं, पर फुटबॉल मेरा प्रिय खेल है। मैदान में गेंद के पीछे दौड़ते खिलाड़ी, सधे हुए पास और गोल करने का प्रयास मुझे बहुत रोमांचित करते हैं। इस खेल की विशेषता है कि सफलता किसी एक खिलाड़ी की प्रतिभा से नहीं, पूरी टीम के सहयोग से मिलती है।

फुटबॉल दो टीमों के बीच खेला जाता है। प्रत्येक टीम में गोलकीपर सहित ग्यारह खिलाड़ी होते हैं। खिलाड़ियों का लक्ष्य गेंद को विरोधी टीम के गोल में पहुँचाना और अपने गोल की रक्षा करना होता है। सामान्यतः गोलकीपर को छोड़कर अन्य खिलाड़ी गेंद को हाथ से नहीं छू सकते। इसलिए पैरों का नियंत्रण, शरीर का संतुलन और सही समय पर निर्णय लेना इस खेल में बहुत महत्त्वपूर्ण हैं।

मैं विद्यालय में अपने मित्रों के साथ फुटबॉल खेलता हूँ। खेल शुरू होने से पहले हम शरीर को अभ्यास के लिए तैयार करते हैं और फिर पास देने तथा गोल करने का अभ्यास करते हैं। मैदान में मुझे यह समझ आता है कि केवल स्वयं गोल करने की इच्छा पर्याप्त नहीं है। कभी साथी को गेंद देना टीम के लिए अधिक उपयोगी होता है। इस प्रकार फुटबॉल मुझे सहयोग और दूसरों की क्षमता पर विश्वास करना सिखाता है।

नियमित फुटबॉल खेलने से शरीर फुर्तीला बनता है और सहनशक्ति बढ़ती है। पढ़ाई के बाद कुछ समय खेलने से मन प्रसन्न होता है तथा एकाग्रता लौट आती है। हार मिलने पर अपनी गलतियों को पहचानना और जीतने पर विनम्र बने रहना भी मैंने इसी खेल से सीखा है। नियमों का पालन और प्रतिद्वंद्वी का सम्मान खेल को सुंदर बनाते हैं।

मेरे लिए फुटबॉल मनोरंजन के साथ व्यक्तित्व निर्माण का माध्यम भी है। मैं पढ़ाई और खेल के बीच संतुलन रखते हुए इसका नियमित अभ्यास करना चाहता हूँ। स्वस्थ शरीर, सजग मन और मिलकर आगे बढ़ने की प्रेरणा देने के कारण फुटबॉल सदा मेरा प्रिय खेल रहेगा।

चरण 3: निष्कर्ष इस निबंध में फुटबॉल के प्रति व्यक्तिगत लगाव, खेल की सामान्य जानकारी, सहयोग, स्वास्थ्य और अनुशासन के

लाभों को क्रमबद्ध ढंग से प्रस्तुत किया गया है।

त्वरित सुझाव: प्रिय खेल पर निबंध में नियमों की लंबी सूची के स्थान पर अपना अनुभव और उससे मिली सीख जोड़ें; इससे लेखन आत्मीय तथा प्रभावपूर्ण बनता है।

3(ग). निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर निबन्ध लिखिए :

भारतीय संस्कृति [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- संस्कृति में समाज के जीवन-मूल्य, विचार, कलाएँ, परंपराएँ और व्यवहार सम्मिलित होते हैं। भारतीय संस्कृति पर निबंध में विविधता, सहिष्णुता, ज्ञान और मानवीय संबंधों का संतुलित विवेचन आवश्यक है।
- विषय का विकास परिचय से उदाहरणों और फिर वर्तमान संदर्भ की ओर करना चाहिए। संस्कृति की विशेषताएँ बताते समय केवल प्रशंसा के बजाय उसके उपयोगी मूल्यों को व्यवहार में अपनाने पर बल दें।

चरण 1: विषय की रूपरेखा पहले संस्कृति का व्यापक अर्थ स्पष्ट करें। फिर भारतीय जीवन की भाषायी और धार्मिक विविधता, मिल-जुलकर रहने की परंपरा, कला-साहित्य और ज्ञान की विरासत पर विचार रखें। इसके बाद बदलते समय में उपयोगी परंपराओं के संरक्षण और रूढ़ियों के परित्याग की आवश्यकता समझाएँ। अंत में नागरिक के दायित्व को सामने रखें।

चरण 2: पूरा नमूना निबंध **भारतीय संस्कृति**

संस्कृति किसी देश की आत्मा की अभिव्यक्ति होती है। उसमें केवल वेशभूषा, भोजन और उत्सव ही नहीं, बल्कि सोचने, जीने और एक-दूसरे के साथ व्यवहार करने के तरीके भी शामिल होते हैं। भारतीय संस्कृति लंबे ऐतिहासिक विकास और अनेक समुदायों के संपर्क से समृद्ध हुई है। इसकी प्रमुख पहचान विविधता में एकता तथा जीवन के प्रति उदार दृष्टि है।

भारत में अनेक भाषाएँ बोली जाती हैं और अलग-अलग धर्मों, रीति-रिवाजों तथा जीवन-पद्धतियों के लोग रहते हैं। प्रदेश बदलने पर भोजन, पहनावा और लोककलाएँ बदल जाती हैं, फिर भी अपनत्व और मानवीय संबंधों का महत्त्व सबको जोड़ता है। त्योहार लोगों को साथ आने, खुशियाँ बाँटने और परस्पर सहयोग का अवसर देते हैं। यह विविधता हमारी कमजोरी नहीं, सांस्कृतिक संपन्नता का आधार है।

भारतीय चिंतन ने सत्य, अहिंसा, करुणा और सहिष्णुता जैसे मूल्यों को महत्त्व दिया है। अतिथि का स्वागत, बड़ों के अनुभव का आदर और जरूरतमंद की सहायता इसी मूल्य-दृष्टि के रूप हैं। परिवार और समाज में एक-दूसरे के सुख-दुख में भाग लेने की भावना व्यक्ति को अकेलेपन से बचाती है। हालाँकि इन आदर्शों का वास्तविक महत्त्व तभी है जब हमारा व्यवहार भी इनके अनुरूप हो।

साहित्य, संगीत, नृत्य, चित्रकला और स्थापत्य हमारी संस्कृति के विविध पक्षों को व्यक्त करते हैं। लोकगीतों से लेकर शास्त्रीय कलाओं तक अनेक परंपराएँ पीढ़ियों को जोड़ती हैं। ज्ञान की खोज, चिंतन और संवाद की प्रवृत्ति भी इस विरासत का महत्त्वपूर्ण अंग है। इसलिए संस्कृति को केवल अतीत की वस्तु मानना उचित नहीं; वह निरंतर विकसित होने वाली जीवनधारा है।

आज आधुनिक शिक्षा और संचार ने संसार को निकट ला दिया है। हमें दूसरे समाजों से उपयोगी विचार ग्रहण करने चाहिए तथा अपनी भाषाओं, कलाओं और मानवीय मूल्यों को भी जीवित रखना चाहिए। जातिगत भेदभाव, स्त्री-असमानता और अंधविश्वास जैसी रूढ़ियों का विरोध संस्कृति को कमजोर नहीं, अधिक मानवीय बनाता है।

भारतीय संस्कृति का संरक्षण केवल स्मारकों या उत्सवों तक सीमित नहीं है। समानता, संवेदनशीलता और पारस्परिक सम्मान को दैनिक जीवन में उतारना भी आवश्यक है। अपनी विविध विरासत के प्रति सजग रहते हुए जब हम सबके लिए गरिमापूर्ण जीवन का प्रयास करेंगे, तभी इस संस्कृति की श्रेष्ठ परंपराएँ सार्थक होंगी।

चरण 3: निष्कर्ष भारतीय संस्कृति की पहचान विविधता, सहिष्णुता, सृजनशीलता और मानवीय मूल्यों में है। इन मूल्यों को वर्तमान जीवन में अपनाना तथा रूढ़ियों से मुक्त होना ही उसकी सार्थक रक्षा है।

त्वरित सुझाव: संस्कृति पर लिखते समय भाषा, कला और त्योहारों के साथ मानवीय मूल्यों तथा वर्तमान नागरिक दायित्व का उल्लेख करें, ताकि निबंध केवल सूची बनकर न रह जाए।

3(घ). निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर निबन्ध लिखिए :

प्राचीन भारतीय विज्ञान [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- विचारप्रधान निबंध में भूमिका, विषय का क्रमबद्ध विवेचन और निष्कर्ष होना चाहिए। ऐतिहासिक उदाहरण विषय को स्पष्ट करें और तथ्यपरक रहें।
- प्राचीन भारतीय विज्ञान के विवेचन में गणित, खगोल, चिकित्सा तथा धातुकर्म के योगदान के साथ वैज्ञानिक दृष्टि का महत्त्व बताना उपयुक्त है।

चरण 1: विषय की रूपरेखा आरंभ में भारतीय ज्ञान-परंपरा का परिचय दें। मुख्य भाग में गणित और खगोल के बाद चिकित्सा तथा धातुकर्म के उदाहरण रखें। अंत में पुरानी उपलब्धियों को आधुनिक अनुसंधान की प्रेरणा से जोड़ें। अतिशयोक्तिपूर्ण दावों के स्थान पर प्रमाणित योगदान लिखें।

चरण 2: पूर्ण नमूना निबंध **प्राचीन भारतीय विज्ञान**

भारत की प्राचीन सभ्यता में प्रकृति को जानने और जीवन की समस्याओं का समाधान खोजने की समृद्ध परंपरा रही है। यहाँ ज्ञान केवल चिंतन तक सीमित नहीं था; गणना, चिकित्सा, निर्माण और कृषि में उसका व्यावहारिक उपयोग भी होता था। प्राचीन भारतीय विज्ञान इस जिज्ञासु और प्रयोगशील दृष्टि का परिचायक है।

गणित के क्षेत्र में भारतीय विद्वानों का योगदान विशेष महत्त्व रखता है। दशमलव स्थानमान पद्धति और शून्य के विकास ने गणना को सरल तथा व्यापक बनाया। ब्रह्मगुप्त ने शून्य सहित संख्याओं के गणितीय नियमों का विवेचन किया। शुल्बसूत्रों में वेदियों के निर्माण से संबंधित ज्यामितीय ज्ञान मिलता है। यह ज्ञान मापन और निर्माण की आवश्यकताओं से जुड़ा था।

खगोल-विज्ञान में आर्यभट का नाम आदर से लिया जाता है। उन्होंने पृथ्वी के अपनी धुरी पर घूमने का विचार प्रस्तुत किया और ग्रहणों की वैज्ञानिक व्याख्या की। ग्रहों की गति, समय की गणना और पंचांग-निर्माण जैसे विषय निरंतर अध्ययन के केंद्र रहे। इन प्रयासों में निरीक्षण और गणितीय गणना का समन्वय दिखाई देता है।

चिकित्सा के क्षेत्र में चरक और सुश्रुत की परंपराएँ उल्लेखनीय हैं। चरक संहिता में स्वास्थ्य, रोग और उपचार का विवेचन है, जबकि सुश्रुत संहिता में शल्य-चिकित्सा संबंधी ज्ञान मिलता है। आहार, स्वच्छता और जीवनचर्या को स्वास्थ्य से जोड़ना इस चिकित्सा-दृष्टि की विशेषता थी। धातुकर्म की कुशलता का प्रसिद्ध उदाहरण दिल्ली का लौह स्तंभ है, जिसने लंबे समय तक जंग का प्रभाव सहा है।

इन उपलब्धियों का सम्मान करते समय हमें इतिहास और कल्पना के बीच भेद रखना चाहिए। प्राचीन ज्ञान को समझने का सर्वोत्तम उपाय उसके ग्रंथों, उपकरणों और प्रमाणों का अध्ययन है। प्रत्येक आधुनिक आविष्कार को प्राचीन काल में मौजूद बताना वैज्ञानिक दृष्टि को कमजोर करता है।

प्राचीन भारतीय विज्ञान हमारी बौद्धिक विरासत है। उससे प्रेरणा लेकर प्रश्न पूछना, प्रमाण खोजना और नए प्रयोग करना ही उस विरासत का सच्चा सम्मान होगा।

चरण 3: निष्कर्ष निबंध में प्राचीन भारत के प्रमाणित वैज्ञानिक योगदानों का संतुलित परिचय दिया गया है और उन्हें जिज्ञासा, परीक्षण तथा आधुनिक अनुसंधान की प्रेरणा से जोड़ा गया है।

त्वरित सुझाव: प्रत्येक वैज्ञानिक क्षेत्र के साथ एक प्रामाणिक उदाहरण जोड़ें और निष्कर्ष में वैज्ञानिक दृष्टि अपनाने का संदेश दें।

4. भ्रष्टाचार में संलिप्त किसी अधिकारी का कारनामा आपने अपने मोबाइल में रिकॉर्ड किया है । विवरण-सहित पुलिस-कमिश्नर को पत्र लिखकर प्रथम सूचना रिपोर्ट लिखने का अनुरोध कीजिए । [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- शिकायत-पत्र में प्रेषक का पता, दिनांक, प्राप्तकर्ता का पद-पता, विषय, संबोधन, तथ्यपूर्ण विवरण, स्पष्ट अनुरोध और हस्ताक्षर होते हैं।
- घटना का समय, स्थान, संबंधित अधिकारी का व्यवहार और उपलब्ध साक्ष्य स्पष्ट करें। भाषा शिष्ट रखें तथा जाँच और प्रथम सूचना रिपोर्ट दर्ज करने का अनुरोध करें।

चरण 1: प्रारूप और विवरण की योजना पुलिस-कमिश्नर को संबोधित पत्र में विषय के अंतर्गत भ्रष्टाचार की शिकायत और प्रथम सूचना रिपोर्ट दर्ज कराने का अनुरोध लिखें। मुख्य अनुच्छेद में घटना का स्थान, दिनांक, अधिकारी द्वारा माँगी गई राशि और मोबाइल रिकॉर्डिंग का उल्लेख करें। अंत में मूल रिकॉर्डिंग उपलब्ध कराने की सहमति देकर निष्पक्ष जाँच का निवेदन करें। नीचे दिया गया पत्र इस स्थिति का पूर्ण नमूना है।

चरण 2: पूर्ण नमूना पत्र 24, विकास नगर

नई दिल्ली

15 मार्च, 2015

सेवा में,

पुलिस-कमिश्नर महोदय

दिल्ली पुलिस मुख्यालय

नई दिल्ली

विषय: अधिकारी द्वारा रिश्वत माँगने की शिकायत और प्रथम सूचना रिपोर्ट दर्ज करने का अनुरोध।

महोदय,

मैं आपके संज्ञान में एक अधिकारी द्वारा रिश्वत माँगने की घटना लाना चाहता हूँ। 12 मार्च, 2015 को प्रातः लगभग 11 बजे मैं विकास नगर स्थित नगर निगम कार्यालय में अपने मकान के मानचित्र की स्वीकृति की स्थिति जानने गया था। वहाँ संबंधित अधिकारी ने सभी आवश्यक दस्तावेज पूरे होने के बावजूद आवेदन आगे बढ़ाने के लिए मुझसे 5,000 रुपये माँगे।

जब मैंने निर्धारित शुल्क की रसीद दिखाते हुए अतिरिक्त धन देने से इनकार किया, तो उन्होंने कहा कि रुपये दिए बिना फाइल आगे नहीं बढ़ेगी। मैंने इस बातचीत को अपने मोबाइल में रिकॉर्ड कर लिया। रिकॉर्डिंग में राशि की माँग और फाइल रोकने की बात स्पष्ट सुनाई देती है। घटना के समय एक अन्य आवेदक भी वहाँ उपस्थित था; आवश्यकता होने पर उसका विवरण उपलब्ध करा सकता हूँ।

ऐसी कार्यप्रणाली से सामान्य नागरिकों का उत्पीड़न होता है और प्रशासन में उनका विश्वास घटता है। अतः आपसे अनुरोध है कि मेरी शिकायत पर प्रथम सूचना रिपोर्ट दर्ज कराने तथा मामले की निष्पक्ष जाँच का निर्देश दें। रिकॉर्डिंग की प्रति संलग्न है। मूल मोबाइल और मूल रिकॉर्डिंग जाँच अधिकारी के समक्ष प्रस्तुत करने को तैयार हूँ। कृपया शिकायत की प्राप्ति और की गई कार्रवाई की सूचना भी प्रदान करें।

धन्यवाद।

भवदीय

अमित कुमार

संपर्क: 98XXXXXXXX

संलग्नक: मोबाइल रिकॉर्डिंग की प्रति तथा आवेदन की प्रति।

चरण 3: निष्कर्ष पत्र में घटना का विवरण, उपलब्ध रिकॉर्डिंग और जाँच में सहयोग की बात देते हुए प्रथम सूचना रिपोर्ट दर्ज कराने का स्पष्ट अनुरोध किया गया है।

त्वरित सुझाव: शिकायत में दिनांक, समय, स्थान और माँगी गई राशि स्पष्ट लिखें; साक्ष्य का उल्लेख करने के बाद अपेक्षित कार्रवाई अवश्य बताएँ।

अथवा

4. प्रायः किसी घटना विशेष को सनसनीख़ेज़ बनाने में मीडिया पूरा प्रयत्न करता है जिससे उसकी जाँच प्रभावित होती है और दर्शक वही सच मान लेते हैं जो मीडिया दिखाता है । इस विषय पर अपने विचार तर्क-सहित प्रस्तुत करते हुए किसी समाचार-पत्र के संपादक को पत्र लिखिए । [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- संपादक को लिखे पत्र में सार्वजनिक महत्त्व के प्रश्न पर शिष्ट, स्पष्ट और तर्कपूर्ण विचार रखे जाते हैं।
- पत्र में प्रेषक का पता, दिनांक, संपादक का पता, विषय, संबोधन, मुख्य कथ्य और समापन आवश्यक हैं।

चरण 1: प्रारूप और उद्देश्य इस पत्र का उद्देश्य मीडिया की सनसनी फैलाने की प्रवृत्ति के दुष्परिणामों की ओर ध्यान दिलाना है। भाषा संयत रहेगी और किसी अप्रमाणित घटना या व्यक्ति पर आरोप नहीं लगाया जाएगा। विषय में जाँच पर असर और उत्तरदायी पत्रकारिता की आवश्यकता स्पष्ट की जाएगी।

चरण 2: विचारों की योजना पहले मीडिया की जनहितकारी भूमिका स्वीकार करें। फिर बताएँ कि अपुष्ट खबरें और समय से पहले दोषारोपण जनमत को प्रभावित करते हैं तथा गवाहों और निष्पक्ष जाँच पर दबाव डाल सकते हैं। अंत में तथ्य-जाँच, संबंधित पक्ष को अवसर और गलती सुधारने जैसे ठोस उपाय सुझाएँ।

चरण 3: पूर्ण आदर्श पत्र 25, विकास नगर
नई दिल्ली–110059
20 मार्च 2015
सेवा में,
संपादक महोदय,
दैनिक जनवाणी,
नई दिल्ली।
विषय: घटनाओं की सनसनीख़ेज़ प्रस्तुति पर रोक लगाने की आवश्यकता।
महोदय,
आपके लोकप्रिय समाचार-पत्र के माध्यम से मैं मीडिया में बढ़ती सनसनी फैलाने की प्रवृत्ति की ओर ध्यान आकर्षित करना चाहता हूँ। मीडिया लोकतंत्र का सजग प्रहरी है, इसलिए उससे तथ्यपूर्ण और निष्पक्ष समाचारों की अपेक्षा की जाती है।
दुर्भाग्य से कभी-कभी दर्शक संख्या बढ़ाने के लिए किसी घटना के अपुष्ट विवरण को बार-बार दिखाया जाता है। उत्तेजक शीर्षक और एकतरफ़ा बहस दर्शकों को वही सच मानने के लिए प्रेरित करते हैं जो परदे पर प्रस्तुत होता है। जाँच पूरी होने से पहले किसी को अपराधी घोषित करने से उसकी प्रतिष्ठा को हानि पहुँचती है। इससे गवाहों के कथन प्रभावित होने और जाँचकर्ताओं पर अनावश्यक दबाव पड़ने की आशंका भी रहती है। न्यायपूर्ण सुनवाई और पीड़ित की गरिमा का सम्मान होना चाहिए।
मीडिया संस्थानों को सूचना की पुष्टि करनी चाहिए, सभी संबंधित पक्षों को अपना मत रखने का अवसर देना चाहिए और समाचार तथा टिप्पणी में स्पष्ट अंतर रखना चाहिए। गोपनीय जाँच-सामग्री के गैरज़िम्मेदार प्रसारण से बचना तथा गलती होने पर प्रमुखता से सुधार प्रकाशित करना भी आवश्यक है।
आशा है, आप इस विषय पर संपादकीय प्रकाशित कर उत्तरदायी पत्रकारिता को प्रोत्साहित करेंगे।
धन्यवाद।
भवदीय,
अभय कुमार

चरण 4: निष्कर्ष मीडिया को सत्यापन, निष्पक्षता और न्यायिक प्रक्रिया के सम्मान के साथ जनहित में समाचार प्रस्तुत करने चाहिए।

त्वरित सुझाव: पत्र में केवल आलोचना न करें; तथ्य-जाँच, दोनों पक्षों को सुनने और त्रुटि-सुधार के ठोस सुझाव भी दें।

5(क). निम्नलिखित प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर लिखिए :

अंशकालिक पत्रकार से आप क्या समझते हैं ? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- पत्रकारों का वर्गीकरण उनके काम के समय और समाचार-संस्था से संबंध के आधार पर किया जाता है।
- अंशकालिक पत्रकार को प्रायः स्ट्रिंगर भी कहा जाता है।

चरण 1: कार्य-संबंध पहचानें अंशकालिक पत्रकार किसी समाचार-संस्था का नियमित पूर्णकालिक कर्मचारी नहीं होता। वह अन्य कामों के साथ किसी क्षेत्र की समाचार-सामग्री संस्था तक पहुँचाता है।

चरण 2: पारिश्रमिक का आधार बताएँ उसे प्रायः भेजी या प्रकाशित समाचार-सामग्री के आधार पर भुगतान मिलता है। इसलिए उसकी पहचान निश्चित पूरे समय की नौकरी से नहीं, आवश्यकता और उपलब्ध समाचारों के अनुसार योगदान देने से होती है।

चरण 3: निष्कर्ष अंशकालिक पत्रकार वह है जो किसी समाचार-संस्था के लिए पूरे समय काम न करके समय-समय पर समाचार भेजता है और प्रायः सामग्री के आधार पर पारिश्रमिक पाता है।

त्वरित सुझाव: परिभाषा में पूरे समय काम न करना और समाचार भेजने के बदले पारिश्रमिक मिलना स्पष्ट करें।

5(ख). निम्नलिखित प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर लिखिए :

पेज थ्री पत्रकारिता क्या है ? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- पेज थ्री पत्रकारिता का संबंध चर्चित व्यक्तियों के सामाजिक और निजी जीवन से है।
- इसमें मनोरंजन, फ़ैशन, पार्टियों और चकाचौंध भरी जीवनशैली की सामग्री प्रमुख होती है।

चरण 1: विषयवस्तु पहचानें फ़िल्मी सितारों, नामी लोगों, सामाजिक समारोहों और पार्टियों से संबंधित खबरों तथा तस्वीरों को प्रमुखता देने वाली पत्रकारिता पेज थ्री पत्रकारिता कहलाती है।

चरण 2: नाम का आशय स्पष्ट करें समाचार-पत्रों के तीसरे पृष्ठ पर ऐसी सामग्री छपने के कारण यह नाम प्रचलित हुआ। इसकी पहचान केवल पृष्ठ-संख्या से नहीं, चर्चित लोगों की जीवनशैली और मनोरंजनप्रधान विषयवस्तु से होती है।

चरण 3: निष्कर्ष पेज थ्री पत्रकारिता में चर्चित व्यक्तियों की पार्टियों, फ़ैशन, सामाजिक गतिविधियों और निजी जीवन से जुड़ी चटपटी खबरें एवं चित्र प्रकाशित किए जाते हैं।

त्वरित सुझाव: केवल तीसरे पृष्ठ की खबर न लिखें; हस्तियों की जीवनशैली, पार्टियाँ और फ़ैशन जैसी विषयवस्तु बताएँ।

5(ग). निम्नलिखित प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर लिखिए :

जनसंचार का तात्पर्य स्पष्ट कीजिए । [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- जनसंचार में संदेश बड़े, विविध और भौगोलिक रूप से बिखरे जनसमूह तक पहुँचता है।
- इसके लिए समाचार-पत्र, रेडियो, टेलीविज़न और इंटरनेट जैसे माध्यम प्रयुक्त होते हैं।

चरण 1: संचार का विस्तार समझें जब कोई संदेश किसी व्यक्ति या छोटे समूह तक सीमित न रहकर व्यापक जनसमुदाय तक पहुँचाया जाता है, तो वह जनसंचार होता है। इसके प्राप्तकर्ता अलग-अलग स्थानों और सामाजिक वर्गों में हो सकते हैं।

चरण 2: माध्यमों की भूमिका जोड़ें रेडियो पर समाचार का प्रसारण या समाचार-पत्र में सार्वजनिक सूचना का प्रकाशन इसके उदाहरण हैं। संचार-माध्यम एक ही सूचना को अनेक लोगों तक पहुँचाने की सुविधा देते हैं; यही जनसंचार का मुख्य आधार है।

चरण 3: निष्कर्ष समाचार-पत्र, रेडियो, टेलीविज़न आदि माध्यमों द्वारा सूचना, विचार और संदेश बड़े तथा बिखरे हुए जनसमूह तक पहुँचाने की प्रक्रिया जनसंचार कहलाती है।

त्वरित सुझाव: परिभाषा में व्यापक जनसमूह और संचार-माध्यम दोनों का उल्लेख करें; रेडियो का उदाहरण दे सकते हैं।

5(घ). निम्नलिखित प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर लिखिए :

आल इंडिया रेडियो की स्थापना कब हुई ? आजकल यह किस संस्था के अंतर्गत है ? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- इस प्रश्न में स्थापना की तिथि और संबंधित संस्था, दोनों तथ्य अपेक्षित हैं।
- भारतीय रेडियो-प्रसारण का आरंभ और आल इंडिया रेडियो नाम का प्रचलन अलग ऐतिहासिक पड़ाव हैं।

चरण 1: स्थापना की तिथि लिखें आल इंडिया रेडियो की स्थापना 8 जून 1936 को हुई। इसी दिन तत्कालीन भारतीय राज्य प्रसारण सेवा को आल इंडिया रेडियो नाम दिया गया था। इसलिए इस प्रश्न में 1936 का उल्लेख करना चाहिए।

चरण 2: संस्था का नाम बताएँ आल इंडिया रेडियो, जिसे आकाशवाणी भी कहते हैं, प्रसार भारती के अंतर्गत कार्य करता है। प्रसार भारती भारत का सार्वजनिक सेवा प्रसारक है। उत्तर में संस्था का नाम स्पष्ट लिखने से प्रश्न का दूसरा भाग भी पूरा होता है।

चरण 3: निष्कर्ष आल इंडिया रेडियो की स्थापना 8 जून 1936 को हुई। यह प्रसार भारती के अंतर्गत है।

त्वरित सुझाव: दोनों बातें साथ याद रखें: 8 जून 1936 स्थापना की तिथि है और प्रसार भारती संबंधित संस्था है।

5(ङ). निम्नलिखित प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर लिखिए :

फ़ीचर के दो लक्षण लिखिए । [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- फ़ीचर तथ्यपरक विषय को रोचक और मानवीय दृष्टि से प्रस्तुत करता है।
- इसकी भाषा सहज, सजीव और प्रभावपूर्ण होती है; प्रस्तुति में लेखक की रचनात्मकता को स्थान मिलता है।

चरण 1: पहला लक्षण: रोचक प्रस्तुति फ़ीचर में किसी विषय, घटना या व्यक्ति के विविध पक्षों को रोचक ढंग से प्रस्तुत किया जाता है। केवल घटना की तुरंत सूचना देने के स्थान पर उसके मानवीय पक्ष, पृष्ठभूमि या अनुभव को उभारा जाता है।

चरण 2: दूसरा लक्षण: सजीव भाषा फ़ीचर की भाषा सरल, चित्रात्मक और संवेदनशील होती है। प्रसंग, वर्णन और अनुभव उसे आकर्षक बनाते हैं। रचनात्मक शैली अपनाते हुए भी उसके तथ्यों की प्रामाणिकता बनाए रखना आवश्यक है।

चरण 3: निष्कर्ष फ़ीचर के दो लक्षण हैं: तथ्यपरक विषय की रोचक तथा मानवीय प्रस्तुति, और सरल, सजीव व चित्रात्मक भाषा का प्रयोग।

त्वरित सुझाव: दो अलग लक्षण लिखें: एक विषय की रोचक मानवीय प्रस्तुति से और दूसरा भाषा-शैली से संबंधित रखें।

6. 'सामाजिक सुरक्षा' विषय पर एक आलेख लिखिए । [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- आलेख में किसी सामाजिक विषय का तथ्यपूर्ण, तर्कसंगत और क्रमबद्ध विवेचन किया जाता है। शीर्षक, लेखक का नाम, भूमिका, मुख्य विचार और निष्कर्ष उसके आवश्यक अंग हैं।
- सामाजिक सुरक्षा का संबंध संकट, बीमारी, बेरोजगारी और वृद्धावस्था में व्यक्ति के सम्मानपूर्ण जीवन तथा आवश्यक सहायता से है।

चरण 1: प्रारूप और विषय की सीमा शीर्षक के नीचे लेखक का नाम दिया जाएगा। भूमिका में सामाजिक सुरक्षा का अर्थ स्पष्ट करेंगे। मुख्य भाग में उसकी आवश्यकता, उससे वंचित लोगों की कठिनाइयाँ और सहायता के उपाय रखेंगे। प्रश्न में निश्चित शब्द-सीमा नहीं दी गई है, इसलिए आलेख को विषय पर केंद्रित और संतुलित रखना चाहिए।

चरण 2: सामग्री का क्रम पहले जीवन की अनिश्चितताओं का उल्लेख करेंगे। फिर श्रमिकों, वृद्धों, महिलाओं, बच्चों और दिव्यांग जनों की सुरक्षा की चर्चा करेंगे। इसके बाद सरकार, समाज और नागरिकों की जिम्मेदारियाँ बताएँगे। अंतिम अनुच्छेद में सहायता को गरिमा और आत्मनिर्भरता से जोड़ेंगे। किसी अप्रमाणित आँकड़े या योजना के लाभ का दावा नहीं करेंगे।

चरण 3: संपूर्ण आदर्श आलेख **सामाजिक सुरक्षा: सम्मानपूर्ण जीवन का आधार**

लेखक: अजय कुमार

मनुष्य परिश्रम करके अपना जीवन चलाता है, पर बीमारी, दुर्घटना, बेरोजगारी या वृद्धावस्था कभी भी उसकी आय का सहारा छीन सकती है। ऐसी परिस्थितियों में व्यक्ति और उसके परिवार को अभाव तथा असहायता से बचाने की व्यवस्था ही सामाजिक सुरक्षा है। इसका उद्देश्य केवल आर्थिक सहायता देना नहीं, बल्कि प्रत्येक नागरिक के जीवन और सम्मान की रक्षा करना है।

हमारे समाज में असंगठित क्षेत्र के अनेक श्रमिकों की आय अनिश्चित रहती है। बीमारी के समय उपचार का खर्च और काम छूटने से परिवार पर दोहरा संकट आता है। निराश्रित वृद्धों, दिव्यांग जनों तथा असहाय बच्चों को भी विशेष सहारे की आवश्यकता होती है। सुलभ स्वास्थ्य-सेवा, सुरक्षित कार्यस्थल, दुर्घटना-सहायता, पेंशन और आवश्यक वस्तुओं तक पहुँच ऐसी कठिनाइयों को कम कर सकती है।

सामाजिक सुरक्षा की सफलता के लिए योजनाएँ बनाना ही पर्याप्त नहीं है। पात्र व्यक्तियों को उनकी जानकारी मिलनी चाहिए और सहायता समय पर पहुँचनी चाहिए। सरल आवेदन-प्रक्रिया, पारदर्शिता और शिकायतों का शीघ्र समाधान आवश्यक हैं। ग्रामीण तथा दूरस्थ क्षेत्रों के लोगों को भी सुविधाओं का समान अवसर मिलना चाहिए।

सरकार के साथ समाज की भी जिम्मेदारी है। नियोक्ता श्रमिकों के अधिकारों का सम्मान करें। नागरिक संकटग्रस्त पड़ोसी की सहायता करें और जरूरतमंदों को उचित संस्थाओं तक पहुँचाएँ। सहायता पाने वाले को अपमानित करना उसके आत्मसम्मान को चोट पहुँचाता है।

सामाजिक सुरक्षा दया का प्रदर्शन नहीं, संवेदनशील समाज की सामूहिक जिम्मेदारी है। जब कमजोर व्यक्ति भी स्वयं को सुरक्षित अनुभव करता है, तभी विकास व्यापक और सार्थक बनता है।

चरण 4: निष्कर्ष इस प्रकार आलेख सामाजिक सुरक्षा का अर्थ, उसकी आवश्यकता और उसके प्रभावी क्रियान्वयन के उपाय स्पष्ट करता है तथा सम्मानपूर्ण जीवन को उसका मुख्य उद्देश्य बनाता है।

त्वरित सुझाव: सामाजिक विषय पर आलेख लिखते समय अर्थ, समस्या, उपाय और निष्कर्ष का क्रम बनाएँ तथा शीर्षक के नीचे लेखक का नाम अवश्य दें।

अथवा

6. 'राष्ट्रीय एकता' विषय पर एक आलेख लिखिए । [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- आलेख किसी विषय पर लेखक के विचारों का तार्किक और क्रमबद्ध प्रस्तुतीकरण है। इसमें उपयुक्त शीर्षक, लेखक का नाम, भूमिका, विवेचन तथा निष्कर्ष होना चाहिए।
- राष्ट्रीय एकता का अर्थ विविध भाषाओं, धर्मों, क्षेत्रों और संस्कृतियों के लोगों में समान राष्ट्रीय संबंध और परस्पर सम्मान की भावना है।

चरण 1: आलेख का प्रारूप पहले विषय के अनुरूप शीर्षक और लेखक का नाम लिखेंगे। भूमिका में भारत की विविधता से आरंभ करके राष्ट्रीय एकता का अर्थ बताएँगे। मुख्य भाग में उसकी आवश्यकता, बाधाओं और उपायों पर विचार करेंगे। अंत में नागरिक के दायित्व पर बल देंगे। प्रश्न में शब्द-सीमा नहीं है, इसलिए विचारों को पर्याप्त विस्तार देते हुए अनावश्यक दोहराव से बचेंगे।

चरण 2: विचारों की योजना भारत की भाषिक, धार्मिक और सांस्कृतिक विविधता को एकता का आधार बनाएँगे। उसके बाद सांप्रदायिकता, जातिगत भेदभाव और क्षेत्रीय संकीर्णता के दुष्प्रभाव समझाएँगे। शिक्षा, समान अवसर, संवाद तथा सहयोग को समाधान के रूप में रखेंगे। एकता का अर्थ सभी की भाषा या संस्कृति को एक जैसा बना देना नहीं है; विविधता के प्रति सम्मान स्पष्ट रहना चाहिए।

चरण 3: संपूर्ण आदर्श आलेख **राष्ट्रीय एकता: विविधता में अपनापन**

लेखक: अजय कुमार

भारत अनेक भाषाओं, धर्मों, वेशभूषाओं और परंपराओं का देश है। यहाँ जीवन के विविध रंग दिखाई देते हैं, फिर भी सभी नागरिक एक राष्ट्र के अंग हैं। इसी साझा पहचान, पारस्परिक विश्वास और देश के प्रति उत्तरदायित्व की भावना को राष्ट्रीय एकता कहते हैं। यह भावना हमारी विविधता को सुरक्षित रखते हुए हमें जोड़ती है।

राष्ट्रीय एकता देश की प्रगति और शांति के लिए आवश्यक है। जब नागरिक एक-दूसरे के सुख-दुख में साथ खड़े होते हैं, तब कठिन परिस्थितियों का सामना अधिक प्रभावी ढंग से कर पाते हैं। प्राकृतिक आपदा में दूसरे प्रदेशों से मिलने वाली सहायता इसी अपनत्व का उदाहरण है। एकता से सहयोग बढ़ता है और समाज की ऊर्जा रचनात्मक कार्यों में लगती है।

सांप्रदायिकता, जातिगत भेदभाव, भाषायी विद्वेष और क्षेत्रीय संकीर्णता इस भावना को कमजोर करते हैं। अफवाहों तथा भड़काऊ संदेशों पर बिना जाँच विश्वास करने से अविश्वास फैल सकता है। हमें किसी व्यक्ति का मूल्यांकन उसके धर्म, जाति या प्रदेश के आधार पर नहीं करना चाहिए। असहमति होने पर भी संवाद और संवैधानिक तरीकों का सहारा लेना आवश्यक है।

शिक्षा राष्ट्रीय एकता का सशक्त माध्यम है। विद्यालयों में विभिन्न प्रदेशों की संस्कृति का परिचय, सामूहिक गतिविधियाँ और परस्पर सम्मान का व्यवहार बच्चों को जोड़ सकते हैं। समान अवसर तथा न्यायपूर्ण व्यवहार नागरिकों में भरोसा बढ़ाते हैं। परिवार और संचार-माध्यम भी सहिष्णुता तथा भाईचारे का संदेश दें।

राष्ट्रीय एकता केवल नारों से स्थापित नहीं होती। इसके लिए हमें अपने दैनिक व्यवहार में समानता, संवेदना और सहयोग अपनाना होगा। अपनी संस्कृति से प्रेम करते हुए दूसरों की संस्कृति का सम्मान करना ही सच्ची राष्ट्रीय भावना है।

चरण 4: निष्कर्ष प्रस्तुत आलेख राष्ट्रीय एकता का अर्थ स्पष्ट करके उसकी आवश्यकता, प्रमुख बाधाओं और व्यावहारिक उपायों का विवेचन करता है। इसका केंद्रीय संदेश विविधता के सम्मान के साथ साझा नागरिक जिम्मेदारी निभाना है।

त्वरित सुझाव: राष्ट्रीय एकता पर लिखते समय विविधता, बाधाएँ और उपाय तीनों शामिल करें; केवल देशप्रेम के नारों से मुख्य विचार का स्थान न भरें।

7. 'स्वच्छता-अभियान' विषय पर एक फ़ीचर लिखिए । [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- फ़ीचर किसी सामाजिक विषय को मानवीय अनुभव, रोचक प्रस्तुति और विचारपूर्ण विवरण के माध्यम से सामने लाता है।
- शीर्षक, लेखक का नाम, दृश्यात्मक आरंभ, विषय का विस्तार और प्रभावशाली अंत फ़ीचर को सुव्यवस्थित बनाते हैं।

चरण 1: प्रारूप और विषय की रूपरेखा स्वच्छता-अभियान पर फ़ीचर का केंद्र सार्वजनिक जीवन में साफ़-सफ़ाई की आवश्यकता और नागरिकों की भागीदारी है। आरंभ किसी परिचित दृश्य से होगा। आगे गंदगी के कारण, स्वास्थ्य पर प्रभाव तथा घर, मोहल्ले और प्रशासन की साझा जिम्मेदारियाँ आएँगी। भाषा सहज, सजीव और पाठक को जोड़ने वाली रखनी चाहिए।

चरण 2: पूर्ण नमूना फ़ीचर स्वच्छता : झाड़ू से आगे की यात्रा

लेखक : एक जागरूक विद्यार्थी

सुबह की सैर पर निकलिए। कहीं सड़क पर बिखरे चाय के कप मिलेंगे, कहीं कूड़े से भरी नाली। इन्हीं के बीच स्कूल जाते बच्चे नाक पर रूमाल रख लेते हैं। क्या साफ़ शहर का सपना केवल सफ़ाईकर्मी का काम है?

स्वच्छता-अभियान इस प्रश्न को हमारे दरवाज़े तक लाता है। घर चमकाना और कूड़ा बाहर सड़क पर फेंक देना सफ़ाई नहीं है। खुले में पड़ा कचरा मक्खियों और मच्छरों को पनपने देता है। रुका हुआ गंदा पानी पूरे मोहल्ले के स्वास्थ्य के लिए खतरा बन सकता है।

बदलाव की शुरुआत छोटी आदतों से होती है। गीला और सूखा कचरा अलग रखें, सार्वजनिक स्थानों पर न थूकें और शौचालय को साफ़ छोड़ें। सब्ज़ियों के छिलकों से खाद बनाई जा सकती है। विद्यालयों में बच्चे स्वच्छता दल बनाकर परिसर की देखभाल और जागरूकता के काम में हिस्सा ले सकते हैं।

लेकिन नागरिकों की मेहनत तभी टिकेगी, जब नियमित कूड़ा-संग्रह, साफ़ नालियाँ और पर्याप्त सार्वजनिक शौचालय उपलब्ध हों। स्थानीय निकाय की जिम्मेदारी तय हो और लोग शिकायत के साथ समाधान में भी भाग लें। सफ़ाईकर्मियों को आवश्यक साधन और सम्मान देना भी इसी अभियान का हिस्सा है।

एक दिन की तस्वीरों से अभियान पूरा नहीं होता। जब हम सड़क को भी अपने आँगन की तरह समझने लगेंगे, तभी स्वच्छता नारा छोड़कर जीवन की आदत बनेगी।

चरण 3: निष्कर्ष इस फ़ीचर में सजीव आरंभ, सामाजिक समस्या का विश्लेषण और नागरिक तथा प्रशासन की साझा भूमिका प्रस्तुत है। इसका केंद्रीय संदेश स्वच्छता को दैनिक व्यवहार बनाना है।

त्वरित सुझाव: फ़ीचर को निबंध की तरह केवल तथ्यों की सूची न बनाएँ; किसी दृश्य से आरंभ करके पाठक को विषय से जोड़ें।

अथवा

7. 'सजग नागरिक' विषय पर एक फ़ीचर लिखिए । [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- फ़ीचर में विषय का सामाजिक महत्त्व किसी परिचित अनुभव और जीवंत भाषा के सहारे उभरता है।
- सजग नागरिक के विषय में अधिकारों के साथ कर्तव्य, संवेदनशीलता और लोकतांत्रिक भागीदारी को जोड़ना आवश्यक है।

चरण 1: प्रारूप और सामग्री की योजना एक आकर्षक शीर्षक और लेखक का नाम दें। किसी रोज़मर्रा के दृश्य से शुरुआत करके दिखाएँ कि सजगता छोटे व्यवहारों में व्यक्त होती है। विस्तार में सार्वजनिक संपत्ति, नियमों, पर्यावरण, मतदान और सूचना की जिम्मेदारी को रखें। अंत में पाठक को आत्मनिरीक्षण के लिए प्रेरित करें।

चरण 2: पूर्ण नमूना फ़ीचर शहर की आँख : सजग नागरिक

लेखक : एक जागरूक विद्यार्थी

चौराहे पर बत्ती लाल हुई। कुछ वाहन रुक गए, लेकिन एक मोटरसाइकिल तेजी से निकल गई। फुटपाथ पर खड़ा बच्चा उसे देख रहा था। हमारी नागरिकता की पहली परीक्षा ऐसे ही छोटे क्षणों में होती है, जब हमें कोई रोकने वाला दिखाई नहीं देता।

सजग नागरिक केवल अपने अधिकारों की माँग करने वाला व्यक्ति नहीं है। वह दूसरों के अधिकारों की जगह भी बचाता है। बस की कतार में अपनी बारी की प्रतीक्षा करना, जरूरतमंद यात्री को सीट देना और सड़क पर घायल व्यक्ति की सहायता करना उसकी संवेदनशीलता के परिचायक हैं।

मोहल्ले का टूटा नल देखकर चुपचाप निकल जाना आसान है। जिम्मेदार व्यक्ति संबंधित विभाग को सूचना देता है और पानी की बर्बादी रोकने का प्रयास करता है। वह सार्वजनिक संपत्ति को अपना समझता है। पार्क की बेंच, विद्यालय की दीवार और सड़क की बत्तियाँ सबकी सुविधा के लिए हैं; उन्हें नुकसान पहुँचाना अपना ही नुकसान है।

लोकतंत्र में सजगता का अर्थ सोच-समझकर मतदान करना और निर्वाचित प्रतिनिधियों से काम का हिसाब माँगना भी है। जाति, लालच या अफवाह के आधार पर निर्णय लेना नागरिक विवेक को कमजोर करता है। बिना जाँच कोई संदेश आगे बढ़ाना भी समाज में भ्रम और तनाव फैला सकता है।

परिवर्तन के लिए किसी बड़े पद की जरूरत नहीं। नियम मानने, गलत बात पर उचित ढंग से आवाज़ उठाने और पड़ोसी के प्रति सहयोगी बनने से शुरुआत हो सकती है। सजग नागरिक की पहचान उसके लंबे भाषण नहीं, रोज़ के वे काम हैं जिनसे दूसरों का जीवन थोड़ा सुरक्षित और बेहतर होता है।

चरण 3: निष्कर्ष फ़ीचर सजग नागरिक को संवेदनशील, जिम्मेदार और विवेकशील सहभागी के रूप में प्रस्तुत करता है। अधिकारों और कर्तव्यों का संतुलन इसका मुख्य विचार है।

त्वरित सुझाव: सजग नागरिक पर लिखते समय हर बड़े विचार के साथ दैनिक जीवन का ठोस उदाहरण दें, ताकि फ़ीचर जीवंत बने।

---

8. खेती न किसान को भिखारी को न भीख बलि,
बनिक को बनिज न चाकर को चाकरी ।।
जीविका विहीन लोग सीद्यमान सोचबस
कहें एक एकन सों कहाँ जाई का करी ।।
बेदहूँ पुरान कही, लोकहूँ बिलोकियत
साँकरे सबै पै राम रावरें कृपा करी ।।
दारिद दसानन दबाई दुनी, दीनबन्धु,
दुरित-दहन देखि तुलसी हहा करी ।।
निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए : [8 अंक]

8(क). प्रकृति और शासन की विषमता के कारणों का उल्लेख कीजिए । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- काव्यांश में तुलसीदास ने आजीविका के संकट से पीड़ित समाज का चित्र प्रस्तुत किया है।
- किसान, व्यापारी, भिखारी और सेवक का एक साथ संकट में होना समस्या की व्यापकता प्रकट करता है।

चरण 1: प्रकृति की विषमता का अर्थ प्रकृति की प्रतिकूलता और खेती के अनुकूल परिस्थितियों के अभाव से किसान की उपज तथा जीविका प्रभावित होती है। कवि की पंक्ति 'खेती न किसान को' इसी संकट की ओर संकेत करती है। जब खेती नहीं चलती, तब समाज के दूसरे वर्गों के जीवन पर भी उसका प्रभाव पड़ता है। काव्यांश किसी एक प्राकृतिक आपदा का नाम नहीं देता; इसलिए उत्तर में किसी विशेष घटना का दावा करना उचित नहीं है।

चरण 2: शासन और सामाजिक व्यवस्था की विषमता शासन की उपेक्षा तथा अव्यवस्थित आर्थिक दशा के कारण लोगों को जीविका

और राहत नहीं मिलती। व्यापारी का व्यापार बंद है, सेवक को नौकरी नहीं और भिखारी को भीख तक नहीं मिलती। ये उदाहरण संसाधनों तथा अवसरों की कमी और जनसाधारण की असहायता व्यक्त करते हैं। लोग चिंता में एक-दूसरे से पूछते हैं कि कहाँ जाएँ और क्या करें; इससे संकट से उबारने वाली व्यवस्था का अभाव स्पष्ट होता है।

चरण 3: निष्कर्ष प्रकृति की प्रतिकूलता से खेती प्रभावित है और शासन की उपेक्षा तथा आर्थिक अव्यवस्था से आजीविका के साधन ठप हैं। फलतः समाज के सभी वर्ग गरीबी और चिंता से ग्रस्त हैं।

त्वरित सुझाव: कारण बताते समय किसान, व्यापारी और सेवक की दशा को पाठ से जोड़ें; काव्यांश में अनुल्लिखित किसी विशेष आपदा का नाम न गढ़ें।

8(ख). तुलसीदास को इस दुरवस्था में किसका भरोसा है और क्यों ?

[2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- तुलसीदास की रामभक्ति में राम दीन-दुखियों के रक्षक और संकटमोचक हैं।
- कवि अपनी आस्था के समर्थन में धर्मग्रंथों और लोकानुभव, दोनों का उल्लेख करते हैं।

चरण 1: भरोसे का आधार पहचानना इस दुरवस्था में तुलसीदास को भगवान राम का भरोसा है। वे राम को 'दीनबन्धु' कहकर पुकारते हैं। इसका अर्थ है गरीब, असहाय और पीड़ित लोगों के हितैषी। गरीबी से दबे समाज के लिए कवि को राम की करुणा ही आशा देती है। वे अपनी पुकार केवल व्यक्तिगत दुख के लिए नहीं, जीविका से वंचित पूरे जनसमुदाय के लिए रखते हैं।

चरण 2: राम पर भरोसा होने का कारण कवि कहते हैं कि वेदों और पुराणों में राम द्वारा संकटग्रस्त लोगों पर कृपा करने का वर्णन है। लोकजीवन में भी उनकी संकटमोचक करुणा अनुभव की जाती है। 'साँकरे सबै पै राम रावरें कृपा करी' में यही विश्वास प्रकट होता है कि राम ने कठिन परिस्थिति में सब पर कृपा की है। इसलिए तुलसीदास आशा करते हैं कि दारिद्र्य और दुख से पीड़ित लोगों का वर्तमान संकट भी राम की अनुकंपा से दूर होगा।

चरण 3: निष्कर्ष तुलसीदास को दीनबन्धु राम का भरोसा है, क्योंकि धर्मग्रंथ और लोकानुभव दोनों बताते हैं कि राम संकट में पड़े लोगों की सहायता करते हैं और उन पर कृपा बरसाते हैं।

त्वरित सुझाव: उत्तर में पहले राम का नाम लिखें, फिर 'दीनबन्धु' और वेद-पुराण तथा लोकानुभव के उल्लेख से भरोसे का कारण स्पष्ट करें।

8(ग). रावण की तुलना किससे की गई है और क्यों ?

[2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- काव्यांश में दरिद्रता को रावण जैसे विनाशकारी और पीड़ादायक शत्रु के रूप में चित्रित किया गया है।
- रूपक का आशय समझने के लिए जनजीवन पर दरिद्रता के प्रभाव को देखना चाहिए।

चरण 1: तुलना की पहचान काव्यांश के 'दारिद दसानन दबाई दुनी' शब्दों में दारिद्र्य अर्थात् दरिद्रता को दशानन रावण का रूप दिया गया है। इस प्रकार प्रश्न में रावण के साथ जिस स्थिति की तुलना पूछी गई है, वह गरीबी है। तुलसीदास ने दरिद्रता को केवल व्यक्तिगत अभाव न मानकर संसार को दबाने वाली विनाशकारी शक्ति बताया है।

चरण 2: तुलना का कारण जिस तरह रावण के अत्याचार से लोग पीड़ित थे, उसी प्रकार गरीबी से समस्त जनता दुखी है। किसान को खेती, व्यापारी को व्यापार और सेवक को नौकरी नहीं मिल रही है। भिक्षुक को भी भीख नहीं मिलती। जीविका के अभाव में सभी चिंतित होकर पूछते हैं कि कहाँ जाएँ और क्या करें। इस व्यापक उत्पीड़न के कारण दरिद्रता को रावण जैसा बताया गया है।

चरण 3: निष्कर्ष दरिद्रता की तुलना रावण से की गई है, क्योंकि वह रावण के समान पूरी दुनिया को दबाकर लोगों को दुख और

असहायता में डाल रही है।

त्वरित सुझाव: 'दारिद दसानन' को आधार बनाकर तुलना तथा जीविका के अभाव को उसका कारण लिखें।

8(घ). आशय स्पष्ट कीजिए :
साँकरे सबै पै राम रावरें कृपा करी । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- काव्य-पंक्ति का आशय संकटग्रस्त मनुष्यों पर राम की कृपा में कवि का विश्वास है।
- पंक्ति को वेद-पुराण और लोकानुभव के उल्लेख से जोड़कर समझना चाहिए।

चरण 1: शब्द और संदर्भ समझना यहाँ 'साँकरे' का अर्थ संकट में और 'रावरें' का अर्थ आपने है। कवि राम को संबोधित करते हुए कहता है कि आपने संकट के समय सभी पर कृपा की है। इससे पहले वेद-पुराणों और संसार में देखे गए अनुभव का उल्लेख है। इसलिए यह कथन केवल तत्काल सहायता की इच्छा नहीं, राम की करुणा में स्थापित विश्वास व्यक्त करता है।

चरण 2: भाव का विस्तार जब लोग जीविका से वंचित होकर दुख और चिंता में डूब जाते हैं, तब कवि को दीनों के बंधु राम का आश्रय दिखाई देता है। उसके अनुसार संकट पड़ने पर राम सभी पीड़ितों की सहायता करते आए हैं। इसी भरोसे से तुलसीदास वर्तमान दरिद्रता और जन-दुख को दूर करने की प्रार्थना करते हैं। पंक्ति में राम की सर्वहितकारी कृपा तथा कवि की विनम्र भक्ति प्रकट होती है।

चरण 3: निष्कर्ष पंक्ति का आशय है कि हे राम, आपने संकट में पड़े सभी लोगों पर कृपा की है; अतः आज दरिद्रता से पीड़ित जनता को भी आपकी सहायता का भरोसा है।

त्वरित सुझाव: पहले 'साँकरे' का अर्थ संकट लिखें, फिर उसे राम की करुणा और कवि के भरोसे से जोड़ें।

अथवा

8. बात सीधी थी पर एक बार
भाषा के चक्कर में
ज़रा टेढ़ी फँस गई ।
उसे पाने की कोशिश में
भाषा को उलटा पलटा
तोड़ा मरोड़ा
घुमाया फिराया
कि बात या तो बने
या फिर भाषा से बाहर आए –
लेकिन इससे भाषा के साथ-साथ
बात और भी पेचीदा होती चली गई ।
सारी मुश्किल को धैर्य से समझे बिना
मैं पेंच को खोलने के बजाए
उसे बेतरह कसता चला जा रहा था
क्योंकि इस करतब पर मुझे
साफ़ सुनाई दे रही थी
तमाशबीनों की शाबाशी और वाह वाह । [8 अंक]

8(क). बात को धैर्य से समझने से कवि का क्या आशय है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कविता सहज विचार को समझकर उचित भाषा में व्यक्त करने का महत्व बताती है।
- धैर्य से समझना मूल भाव और अभिव्यक्ति की कठिनाई पर शांत होकर विचार करना है।

चरण 1: धैर्य का अर्थ बात को धैर्य से समझने का अर्थ है पहले उसके मूल भाव, उद्देश्य और वास्तविक कठिनाई को ध्यान से पहचानना। कवि को देखना चाहिए कि वह कहना क्या चाहता है और उसकी बात किस कारण उलझ रही है। जल्दबाजी में भाषा को बार-बार बदल देने से भाव स्पष्ट नहीं होता। उसके लिए शांत विचार और अर्थ की सही पकड़ आवश्यक है।

चरण 2: कविता के प्रसंग से पुष्टि कवि स्वीकार करता है कि वह मुश्किल को समझे बिना भाषा को उलटता-पलटता और तोड़ता-मरोड़ता रहा। पेंच खोलने के स्थान पर उसे कसने की उपमा इसी गलत प्रयास को स्पष्ट करती है। धैर्य से समझने पर वह दिखावटी भाषिक करतब और लोगों की वाहवाही से बचकर सहज, सटीक अभिव्यक्ति चुन सकता था। इस प्रकार धैर्य का संबंध विचार की स्पष्टता और उपयुक्त शब्दों के विवेकपूर्ण चयन से है।

चरण 3: निष्कर्ष कवि का आशय मूल विचार और उसकी कठिनाई को शांत मन से समझकर, बिना भाषिक दिखावे के उसे सहज और स्पष्ट रूप में व्यक्त करना है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में मूल भाव की समझ, भाषा की सहजता और जल्दबाजी से बचने को साथ रखें।

8(ख). बात और भाषा परस्पर एक-दूसरे से कैसे सम्बद्ध हैं ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- बात विचार या भाव है और भाषा उसे दूसरों तक पहुँचाने का माध्यम है।
- सफल अभिव्यक्ति में भाषा मूल अर्थ को स्पष्ट करती है और उसी के अनुरूप रहती है।

चरण 1: परस्पर संबंध समझना बात मनुष्य के मन का विचार, भाव या आशय है। भाषा उस आशय को शब्दों के माध्यम से व्यक्त करती है। इसलिए बात को दूसरों तक स्पष्ट रूप से पहुँचने के लिए उपयुक्त भाषा चाहिए और भाषा को सार्थक होने के लिए कोई विचार चाहिए। दोनों एक-दूसरे से जुड़े हैं; अभिव्यक्ति का उद्देश्य तभी पूरा होता है जब शब्द अपने भीतर निहित भाव को ठीक प्रकार प्रकट करें।

चरण 2: कविता से संबंध स्पष्ट करना कविता में सीधी बात भाषा के चक्कर में उलझ जाती है। कवि जब शब्दों को अनावश्यक रूप से तोड़ता-मरोड़ता है, तब भाषा के साथ बात भी पेचीदा होने लगती है। इससे स्पष्ट होता है कि भाषा में पैदा हुई कृत्रिमता अर्थ की सहजता को भी प्रभावित करती है। सरल बात के लिए स्वाभाविक, सटीक और सहज भाषा आवश्यक है, ताकि भाषिक प्रदर्शन मूल भाव पर हावी न हो।

चरण 3: निष्कर्ष बात भाषा की विषयवस्तु है और भाषा बात की अभिव्यक्ति का माध्यम है। दोनों की अनुकूलता से अर्थ स्पष्ट होता है; भाषा की उलझन बात को भी उलझा देती है।

त्वरित सुझाव: पहले बात और भाषा का अर्थ अलग-अलग बताकर फिर कविता की उलझन से उनका संबंध समझाएँ।

8(ग). बात पेचीदा कब हो जाती है ? क्यों ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- अनावश्यक शब्द-चमत्कार मूल बात को अस्पष्ट कर देता है।

- कविता में पेंच कसने की छवि गलत ढंग से समस्या सुलझाने का संकेत है।

चरण 1: बात के पेचीदा होने की स्थिति बात तब पेचीदा हो जाती है जब उसे सहज रूप में कहने के बजाय भाषा के दिखावे और शब्दों के करतब में उलझाया जाता है। कवि मूल कठिनाई को धैर्य से समझे बिना भाषा को उलटता-पलटता, तोड़ता-मरोड़ता और घुमाता-फिराता है। इस प्रक्रिया में सीधी बात का मूल रूप पीछे छूट जाता है और उसका अर्थ पकड़ना कठिन होने लगता है।

चरण 2: कारण स्पष्ट करना कवि का ध्यान स्पष्ट संप्रेषण के स्थान पर तमाशबीनों की शाबाशी और वाहवाही की ओर चला जाता है। इसलिए वह सही शब्द खोजने के बजाय भाषा पर अनावश्यक दबाव डालता रहता है। जिस प्रकार पेंच को गलत दिशा में कसते रहने से वह खुलने के बजाय और फँसता है, उसी प्रकार अनुचित भाषिक प्रयोग अर्थ की समस्या को बढ़ाते हैं। मूल भाव को न समझना और प्रशंसा के आकर्षण में पड़ना इस जटिलता के कारण हैं।

चरण 3: निष्कर्ष बात भाषिक दिखावे, अनावश्यक तोड़-मरोड़ और मूल भाव को समझे बिना व्यक्त करने पर पेचीदा हो जाती है, क्योंकि ये प्रयास अर्थ को स्पष्ट करने के बजाय ढक देते हैं।

त्वरित सुझाव: कब के उत्तर में भाषिक तोड़-मरोड़ और क्यों के उत्तर में मूल भाव की उपेक्षा तथा वाहवाही लिखें।

8(घ). आशय स्पष्ट कीजिए :

भाषा के चक्कर में ज़रा टेढ़ी फँस गई । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- यह पंक्ति सीधी बात और कृत्रिम अभिव्यक्ति के बीच उत्पन्न कठिनाई को व्यक्त करती है।
- भाषा का उद्देश्य अर्थ स्पष्ट करना है; अनावश्यक प्रयोग उस उद्देश्य में बाधा डालते हैं।

चरण 1: पंक्ति का सामान्य अर्थ पंक्ति का आशय है कि कवि की बात मूलतः सरल और स्पष्ट थी, लेकिन उसे व्यक्त करने के लिए भाषा का अनावश्यक फेरबदल करने से वह उलझ गई। 'भाषा के चक्कर' से आशय शब्दों के चुनाव, सजावट और प्रयोग के ऐसे फेर से है जिसमें मूल विचार सहज रूप में व्यक्त नहीं हो पाता। 'टेढ़ी फँस गई' विचार के अस्पष्ट और कठिन हो जाने की स्थिति बताता है।

चरण 2: निहित संदेश स्पष्ट करना कवि बात को प्रभावशाली बनाने के प्रयास में भाषा को तोड़ता-मरोड़ता है। उससे विचार सँवरने के बजाय अधिक पेचीदा होता जाता है। पंक्ति संकेत करती है कि भाषा पर कृत्रिम दबाव डालने और शब्द-चमत्कार दिखाने से संप्रेषण बाधित हो सकता है। विचार की सहजता बनाए रखने के लिए उसके अनुकूल सरल और सटीक भाषा अपनानी चाहिए। बाहरी प्रशंसा से अधिक महत्व बात को ठीक रूप में पहुँचाने का है।

चरण 3: निष्कर्ष सीधी बात अनुचित और कृत्रिम भाषिक प्रयोगों के कारण स्पष्ट रूप में व्यक्त नहीं हो सकी; शब्दों की उलझन ने उसके अर्थ को भी उलझा दिया।

त्वरित सुझाव: पंक्ति समझाते समय भाषा के फेरबदल से मूल अर्थ के अस्पष्ट होने का संबंध अवश्य बताएँ।

9. प्रभु प्रलाप सुनि कान बिकल भए वानर निकर ।
आइ गयउ हनुमान, जिमि करुना महँ वीर रस ।।
निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए : [6 अंक]

9(क). काव्य-पंक्तियों का भाव-सौंदर्य स्पष्ट कीजिए । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- काव्यांश करुणा से भरे वातावरण में हनुमान के आगमन से उत्पन्न आशा को दर्शाता है।
- भाव-सौंदर्य में पात्रों की भावनाएँ और वातावरण का परिवर्तन स्पष्ट करना चाहिए।

चरण 1: करुण स्थिति स्पष्ट करना लक्ष्मण की मूर्च्छा से व्याकुल राम का विलाप सुनकर वानर-समूह भी अत्यंत दुखी और बेचैन हो जाता है। 'बिकल भए वानर निकर' में साथियों की संवेदनशीलता और राम के प्रति उनका गहरा आत्मीय लगाव प्रकट होता है। राम का दुःख केवल उनका निजी दुःख नहीं रहता, बल्कि पूरी वानर-सेना को प्रभावित करता है। वातावरण शोक और असहायता से भर जाता है।

चरण 2: हनुमान के आगमन का प्रभाव इसी समय हनुमान का आना ऐसा लगता है मानो करुण रस के बीच वीर रस साकार हो उठा हो। उनके आगमन में संकट दूर करने की शक्ति, साहस और आशा का संकेत है। शोकाकुल समूह को सहायता मिलने का भरोसा जगता है। काव्यांश का भाव-सौंदर्य इस परिवर्तन में है कि गहरी करुणा के बीच हनुमान की सक्रिय वीरता आश्वासन लेकर आती है और निराश वातावरण में उत्साह का संचार करती है।

चरण 3: निष्कर्ष राम का विलाप सभी वानरों को व्याकुल कर देता है; उसी करुण वातावरण में हनुमान का आगमन वीरता और आशा का संचार करता है। करुणा और वीरता का यह संगम भाव-सौंदर्य है।

त्वरित सुझाव: भाव-सौंदर्य में पहले वानरों की व्याकुलता और फिर हनुमान से आई आशा का परिवर्तन दिखाएँ।

9(ख). प्रयुक्त दो अलंकारों के उदाहरण चुनकर उनके सौंदर्य पर टिप्पणी कीजिए । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- अनुप्रास में एक ही व्यंजन की आवृत्ति से नाद-सौंदर्य उत्पन्न होता है।
- उपमा में किसी समानता के आधार पर उपमेय की तुलना उपमान से की जाती है।

चरण 1: अनुप्रास का उदाहरण और प्रभाव 'प्रभु प्रलाप' में 'प्र' ध्वनि की आवृत्ति से अनुप्रास अलंकार है। यह ध्वनिसाम्य राम के करुण विलाप को लय और मार्मिकता देता है। शोक केवल सूचना बनकर नहीं रहता, बल्कि सुनने वाले के मन को व्याकुल करने वाली अनुभूति बन जाता है। वानर-समूह का विकल होना इस करुण प्रभाव को और स्पष्ट करता है।

चरण 2: उपमा का उदाहरण और प्रभाव 'आइ गयउ हनुमान, जिमि करुना महँ वीर रस' में उपमा अलंकार है। 'जिमि' उपमावाचक शब्द है। हनुमान के आगमन की तुलना करुण रस के बीच वीर रस के प्रकट होने से की गई है। शोक में डूबी सेना के बीच हनुमान आशा, शक्ति और उत्साह लाते हैं। इस तुलना से करुणा से वीरता की ओर बदलता वातावरण सजीव हो उठता है।

चरण 3: निष्कर्ष काव्यांश में अनुप्रास से ध्वनि की सुंदरता और उपमा से करुण वातावरण में आशा व वीरता का सुंदर संयोग व्यक्त हुआ है।

त्वरित सुझाव: पहले 'प्रभु प्रलाप' में ध्वनि की आवृत्ति पहचानें, फिर 'जिमि' के सहारे उपमा और उसके भावात्मक प्रभाव को लिखें।

9(ग). काव्यांश की भाषा-शैली की दो विशेषताएँ लिखिए । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- भाषा की विशेषता बताते समय बोली, शब्दरूप और भाव व्यक्त करने की क्षमता के उदाहरण देना चाहिए।
- शैली की विशेषता काव्य में भावों को प्रस्तुत करने के ढंग से पहचानी जाती है।

चरण 1: सरस और भावानुकूल अवधी भाषा काव्यांश की भाषा सरस, प्रवाहपूर्ण और भावानुकूल अवधी है। 'सुनि', 'भए', 'आइ गयउ' और 'महँ' जैसे रूप उसकी पहचान कराते हैं। सहज शब्दों में राम के विलाप और वानरों की व्याकुलता व्यक्त हुई है। भाषा की सरलता से पाठक बिना कठिन व्याख्या के शोकपूर्ण वातावरण अनुभव कर लेता है। 'प्रलाप' और 'बिकल' जैसे शब्द करुण भाव को विशेष रूप से उभारते हैं।

चरण 2: अलंकारपूर्ण और चित्रात्मक शैली शैली संक्षिप्त, अलंकारपूर्ण और चित्रात्मक है। 'प्रभु प्रलाप' की ध्वन्यावृत्ति से लय उत्पन्न होती है। 'जिमि करुना महँ वीर रस' की तुलना हनुमान के आगमन को सजीव और प्रभावपूर्ण बनाती है। कुछ ही शब्दों में पहले शोकाकुल वानर-समूह और फिर आशा जगाते हनुमान का दृश्य सामने आता है। करुण और वीर भावों का मेल शैली को नाटकीय प्रभाव देता है।

चरण 3: निष्कर्ष इस काव्यांश की दो प्रमुख विशेषताएँ भावानुकूल अवधी भाषा और अलंकारपूर्ण चित्रात्मक शैली हैं।

त्वरित सुझाव: दो विशेषताओं को अलग-अलग लिखें और प्रत्येक के समर्थन में काव्यांश से एक शब्दरूप या पंक्ति अवश्य दें।

अथवा

9. हँसते हैं पौधे लघु भार
शस्य अपार
हिल-हिल, खिल-खिल
हाथ हिलाते
तुझे बुलाते,
विप्लव-रव से छोटे ही हैं शोभा पाते । [6 अंक]

9(क). काव्यांश का शिल्प-सौंदर्य स्पष्ट कीजिए । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- शिल्प-सौंदर्य में भाषा, अलंकार, लय, बिंब और प्रतीक के प्रभाव का विवेचन किया जाता है।
- प्रकृति को मानवीय क्रियाएँ देना मानवीकरण है; शब्दों की पुनरावृत्ति लय और गति उत्पन्न करती है।

चरण 1: अलंकार और सजीव बिंब पौधों का हँसना, हाथ हिलाना और बादल को बुलाना मानवीकरण अलंकार के उदाहरण हैं। कवि पौधों को प्रसन्न मनुष्यों के रूप में प्रस्तुत करता है। इससे बादल के स्वागत का दृश्य सजीव हो उठता है। 'हिल-हिल' और 'खिल-खिल' में पुनरुक्तिप्रकाश अलंकार है। इन शब्दों से पौधों की गति, उल्लास और खिलावट एक साथ अनुभव होती है।

चरण 2: भाषा, लय और प्रतीकात्मकता काव्यांश की भाषा साहित्यिक खड़ी बोली है। 'शस्य', 'विप्लव' और 'रव' जैसे तत्सम शब्द अर्थ को सघन बनाते हैं। छोटे-छोटे पदखंड और 'हिलाते-बुलाते-पाते' का ध्वनिसाम्य मुक्तछंद में भी लय बनाए रखते हैं। बादल क्रांति का और छोटे पौधे साधारण जन का प्रतीक हैं। इस प्रकार प्राकृतिक दृश्य सामाजिक परिवर्तन की आकांक्षा को व्यक्त करता है।

चरण 3: निष्कर्ष मानवीकरण, पुनरुक्तिप्रकाश, गतिशील बिंब, लयात्मक भाषा और क्रांति की प्रतीकात्मक अभिव्यक्ति काव्यांश के शिल्प को सुंदर बनाते हैं।

त्वरित सुझाव: शिल्प के उत्तर में केवल भाव न लिखें; अलंकार का उदाहरण, लय का आधार और प्रतीक का अर्थ अलग-अलग पहचानें।

9(ख). काव्यांश का भाव-सौंदर्य समझाइए । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- भाव-सौंदर्य में कविता की अनुभूति, विचार और उसके मानवीय महत्व को स्पष्ट किया जाता है।
- बादल तथा छोटे पौधों के संबंध से क्रांति और साधारण जन के हित का संकेत मिलता है।

चरण 1: प्रकृति का उल्लास और स्वागत बादल के आने पर छोटे पौधे प्रसन्न होकर हिलते और खिलते हैं। कवि को उनका हिलना हाथ हिलाकर बादल को बुलाने जैसा दिखाई देता है। फसल की समृद्धि का आधार वर्षा है, इसलिए बादल उनके लिए जीवन और विकास का संदेश लाता है। प्रकृति का यह सहज उल्लास पाठक के मन में भी आशा तथा प्रसन्नता जगाता है।

चरण 2: साधारण जन की परिवर्तन में आशा काव्यांश में बादल क्रांति का प्रतीक है और छोटे पौधे साधारण, शोषित जन के प्रतीक हैं। 'विप्लव-रव से छोटे ही हैं शोभा पाते' का आशय है कि परिवर्तन से वंचित लोगों को उन्नति, सम्मान और अपने अधिकार पाने का अवसर मिलता है। इसलिए वे क्रांति के स्वर से भयभीत नहीं होते, बल्कि उसका स्वागत करते हैं। प्रकृति का दृश्य सामाजिक न्याय की आशा से जुड़ जाता है।

चरण 3: निष्कर्ष काव्यांश का भाव-सौंदर्य छोटे पौधों के उल्लास के माध्यम से साधारण जन की क्रांति, उन्नति और बेहतर जीवन की आशा को व्यक्त करने में है।

त्वरित सुझाव: पहले पौधों की प्रसन्नता का प्रत्यक्ष अर्थ लिखें, फिर छोटे पौधे और बादल के सामाजिक प्रतीक स्पष्ट करें।

9(ग). प्रयुक्त भाषा की दो विशेषताएँ लिखिए । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- भाषा की विशेषताओं में शब्दावली, सहजता, लय और चित्र उपस्थित करने की क्षमता आती है।
- प्रत्येक विशेषता को काव्यांश के किसी शब्द या प्रयोग से प्रमाणित करना चाहिए।

चरण 1: साहित्यिक खड़ी बोली और सटीक शब्दावली काव्यांश की भाषा साहित्यिक खड़ी बोली है। इसमें 'शस्य', 'अपार', 'विप्लव' और 'रव' जैसे तत्सम शब्द प्रयुक्त हैं। इनके साथ 'हँसते', 'हाथ हिलाते' और 'तुझे बुलाते' जैसे सहज प्रयोग भी हैं। यह मेल भाषा को अर्थपूर्ण और संप्रेषणीय बनाता है। 'विप्लव-रव' जैसा सघन शब्द थोड़े में ही क्रांति की पुकार का व्यापक अर्थ व्यक्त करता है।

चरण 2: लयात्मक और चित्रात्मक अभिव्यक्ति भाषा लयात्मक तथा चित्रात्मक है। 'हिल-हिल, खिल-खिल' की पुनरावृत्ति से गति और उल्लास का श्रव्य प्रभाव बनता है। 'हिलाते', 'बुलाते' और 'पाते' का ध्वनिसाम्य संगीतात्मकता बढ़ाता है। पौधों का हाथ हिलाकर पुकारना दृश्य को सजीव करता है। इस प्रकार कविता पढ़ते समय पौधों का झूमना दिखाई भी देता है और उनके स्वागत का उत्साह अनुभव भी होता है।

चरण 3: निष्कर्ष प्रयुक्त भाषा की दो विशेषताएँ हैं—तत्सम शब्दों से युक्त साहित्यिक खड़ी बोली और लयात्मक, चित्रात्मक अभिव्यक्ति।

त्वरित सुझाव: भाषा की विशेषता लिखते समय 'शस्य/विप्लव' से शब्दावली और 'हिल-हिल/खिल-खिल' से लय का उदाहरण दें।

10(क). निम्नलिखित में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

'कैमरे में बन्द अपाहिज' सामाजिक संवेदनशून्यता का जीता-जागता उदाहरण है, कैसे ? उदाहरण द्वारा स्पष्ट कीजिए । [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- रघुवीर सहाय की कविता संचार-माध्यमों द्वारा मनुष्य के दुख को प्रदर्शन की वस्तु बनाने की प्रवृत्ति पर व्यंग्य करती है।
- संवेदनशीलता में दुखी व्यक्ति की गरिमा का सम्मान होता है; संवेदनशून्यता में उसकी पीड़ा को अपने लाभ का साधन बनाया जाता है।

चरण 1: पीड़ित मनुष्य को प्रदर्शन की वस्तु बनाना 'कैमरे में बंद अपाहिज' में कार्यक्रम प्रस्तुत करने वाला व्यक्ति दिव्यांग के दुख को समझने या उसकी सहायता करने के लिए प्रश्न नहीं करता। उसका उद्देश्य दर्शकों के सामने एक प्रभावशाली कार्यक्रम तैयार करना है। वह निजी पीड़ा को सार्वजनिक तमाशे में बदल देता है। कैमरे और प्रसारण पर नियंत्रण रखने वाला पक्ष समर्थ है, जबकि प्रश्नों से घिरा व्यक्ति असहाय है। इस असमान संबंध में उसकी इच्छा और गरिमा पीछे छूट जाती है।

चरण 2: कृत्रिम करुणा का उदाहरण प्रस्तुतकर्ता दिव्यांग से बार-बार उसके दुख के बारे में पूछकर उसे रोने के लिए विवश करता है। उसका रोना कार्यक्रम की सफलता और दर्शकों की भावुक प्रतिक्रिया पाने का साधन बन जाता है। पीड़ा को उभारने और कैमरे पर पकड़ने की यह कोशिश संवेदना का अभिनय है। दुखी व्यक्ति को सहज होने देने के स्थान पर उससे मनचाही प्रतिक्रिया निकलवाई जाती है। दर्शक भी यदि केवल देखकर द्रवित हों और फिर भूल जाएँ, तो ऐसी करुणा वास्तविक मानवीय जुड़ाव नहीं बन पाती।

चरण 3: व्यंग्य का सामाजिक आशय कवि इस व्यवहार के माध्यम से दिखाते हैं कि प्रसिद्धि और कार्यक्रम की लोकप्रियता की चाह मनुष्य को दूसरे की पीड़ा के प्रति कठोर बना सकती है। साक्षात्कार में सहानुभूति का रूप दिखाई देता है, पर भीतर आत्मप्रदर्शन और लाभ की इच्छा काम करती है। कविता पाठक को ऐसी बनावटी करुणा पहचानने तथा पीड़ित व्यक्ति को मनोरंजन की सामग्री मानने के बजाय सम्मानपूर्ण व्यवहार करने की प्रेरणा देती है।

चरण 4: निष्कर्ष दिव्यांग की पीड़ा को समझने के बजाय उसे रुलाकर सफल कार्यक्रम बनाना सामाजिक संवेदनशून्यता का सजीव उदाहरण है। कविता इसी अमानवीय प्रदर्शन पर व्यंग्य करती है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में कार्यक्रम का उद्देश्य और दिव्यांग को रुलाने का उदाहरण जोड़ें; फिर बताएं कि यह व्यवहार उसकी गरिमा को कैसे चोट पहुँचाता है।

10(ख). निम्नलिखित में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

'पतंग' कविता में कवि ने बच्चों की तुलना किससे की है और क्यों ? उदाहरण सहित समझाइए । [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- उपमा के माध्यम से बच्चों की गति, कोमलता और उमंग को पहचानना आवश्यक है।
- कविता में दृश्य बिंब बच्चों के उत्साह और निर्भयता को मूर्त बनाते हैं।

चरण 1: तुलना और उसका आधार कवि ने बच्चों की तुलना तितलियों से की है। पतंग उड़ाते हुए बच्चे रंगीन तितलियों जैसे चंचल, सुंदर और उत्साह से भरे दिखाई देते हैं। जैसे तितलियाँ एक स्थान से दूसरे स्थान पर उड़ती रहती हैं, वैसे ही बच्चे पतंग के साथ छत पर इधर-उधर दौड़ते हैं। उनके मन में आकाश तक पहुँचने की इच्छा है; इसलिए उनका खेल साधारण दौड़ न रहकर उड़ान का अनुभव बन जाता है।

चरण 2: कविता के उदाहरण से स्पष्टीकरण कवि बच्चों को तितलियों का दल कहता है और उनके कोमल शरीर के साथ उनकी बेचैन गति का चित्र खींचता है। उनकी कल्पना रंगीन पतंगों के साथ उड़ती है। वे छतों के खतरनाक किनारों तक पहुँच जाते हैं, फिर भी भय उनका उत्साह नहीं रोकता। कविता में उनके शरीर को मानो फूलों से बनी कोमलता और पृथ्वी के घूमने जैसी बेचैनी मिली है। ये बिंब उनकी नाजुकता के साथ उनकी अदम्य सक्रियता भी प्रकट करते हैं। इस तुलना से बालपन की सहज सुंदरता भी उभरती है। बच्चे खेल

में पूरी तरह लीन हैं; उनके लिए आकाश बाधा नहीं बल्कि अपनी कल्पना को फैलाने का खुला अवसर है। इसीलिए तितलियों का बिंब उनकी स्वतंत्र वृत्ति को भी व्यक्त करता है।

चरण 3: निष्कर्ष बच्चे तितलियों की तरह चंचल, रंगीन कल्पनाओं से भरे और उड़ान के आनंद में डूबे हैं; इसीलिए कवि ने उनकी तुलना तितलियों से की है।

त्वरित सुझाव: तुलना का नाम बताकर चंचलता, कोमलता और उड़ान के आनंद को कविता के बिंबों से जोड़ें।

10(ग). निम्नलिखित में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

कवि ने खेत की तुलना काग़ज़ से क्यों की है ? स्पष्ट कीजिए । [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कविता में काव्यरचना की प्रक्रिया को खेती के रूपक द्वारा समझाया गया है।
- खेत और काग़ज़ दोनों सृजन के आधार हैं; फसल और कविता उस सृजन के फल हैं।

चरण 1: खेत और काग़ज़ की समानता कवि के लिए काग़ज़ का पन्ना छोटा खेत है। किसान खेत में बीज बोकर फसल उगाता है; उसी तरह कवि काग़ज़ पर भाव और कल्पना के बीज बोकर कविता रचता है। जिस प्रकार खेत बीज को विकसित होने का स्थान देता है, उसी प्रकार काग़ज़ अनुभूति को शब्दों में आकार देने का आधार बनता है। इसलिए यहाँ खेती के माध्यम से कवि ने अपनी रचना की प्रक्रिया को सहज और ठोस रूप दिया है।

चरण 2: रूपक का विस्तार और विशेषता किसी भावनात्मक अनुभव से कवि के भीतर विचार का बीज पड़ता है। कल्पना उसका पोषण करती है और शब्द अंकुर की तरह फूटते हैं। अंततः पूरी रचना साहित्य की रसपूर्ण फसल बन जाती है। साधारण खेत की फसल कटने पर समाप्त हो जाती है, पर कविता का आनंद बार-बार पढ़ने और बाँटने से समाप्त नहीं होता। काग़ज़ का छोटा-सा पन्ना असंख्य पाठकों को आनंद दे सकता है। इसी अक्षय साहित्यिक उपज को समझाने के लिए कवि खेत और काग़ज़ को एक-दूसरे से जोड़ता है। यहाँ खेत का छोटा होना रचना की सीमा नहीं बताता। थोड़े से शब्दों में भी व्यापक जीवनानुभव समा सकता है और पाठक को बार-बार नया अर्थ मिल सकता है।

चरण 3: निष्कर्ष काग़ज़ भावों और कल्पना को कविता के रूप में उगाने वाला खेत है; उसकी साहित्यिक फसल का रस बार-बार ग्रहण करने पर भी समाप्त नहीं होता।

त्वरित सुझाव: खेत, बीज, अंकुर और फसल को क्रमशः काग़ज़, अनुभूति, शब्द और कविता से जोड़कर समझाएँ।

11. मेरे परिचितों और साहित्यिक बन्धुओं से भी भक्तिन विशेष परिचित है; पर उनके प्रति भक्तिन के सम्मान की मात्रा, मेरे प्रति उनके सम्मान की मात्रा पर निर्भर है, और सद्भाव उनके प्रति मेरे सद्भाव से निश्चित होता है । इस सम्बन्ध में भक्तिन की सहज बुद्धि विस्मित कर देने वाली है ।

वह किसी को आकार-प्रकार और वेश-भूषा से स्मरण करती है, और किसी को नाम के अपभ्रंश द्वारा । कवि और कविता के सम्बन्ध में उसका ज्ञान बढ़ा है; पर आदर-भाव नहीं । किसी के लम्बे बाल और अस्त-व्यस्त वेश-भूषा देखकर वह कह उठती है 'का ओहू कवित्त लिखे जानत हैं' और तुरन्त ही उसकी अवज्ञा प्रकट हो जाती है – 'तब ऊ कुच्छौ करिहैं धरिहैं ना – बस गली-गली गाउत बजाउत फिरिहैं ।'

निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए : [8 अंक]

11(क). लेखिका ने भक्तिन की बुद्धि को विस्मित कर देने वाली क्यों कहा है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- उत्तर में भक्तिन के व्यवहार का आधार दिए हुए गद्यांश से पहचानना है।
- लेखिका के प्रति निष्ठा भक्तिन के सामाजिक व्यवहार को दिशा देती है।

चरण 1: व्यवहार का आधार भक्तिन लेखिका के परिचितों और साहित्यिक बंधुओं को पहचानती है। वह उनके बाहरी रूप या प्रसिद्धि के आधार पर ही सम्मान नहीं करती। वह देखती है कि कोई व्यक्ति लेखिका का कितना सम्मान करता है। उसी अनुपात में वह भी उस व्यक्ति के प्रति आदर प्रकट करती है।

चरण 2: विस्मय का कारण भक्तिन यह भी सहज रूप से समझ लेती है कि लेखिका किसी परिचित के प्रति कितना सद्भाव रखती हैं। वह बिना किसी औपचारिक निर्देश के अपने व्यवहार को उसी के अनुरूप ढाल लेती है। संबंधों की यह सूक्ष्म समझ और लेखिका की भावनाओं को पहचानने की क्षमता उसकी सहज बुद्धि का प्रमाण है। इसी व्यावहारिक सूझ से लेखिका विस्मित होती हैं।

चरण 3: निष्कर्ष लेखिका के सम्मान और सद्भाव को परखकर अपना व्यवहार तय करने की भक्तिन की सहज क्षमता लेखिका को विस्मित करती है।

त्वरित सुझाव: सम्मान और सद्भाव के दोनों आधार अलग-अलग बताकर उन्हें लेखिका के साथ भक्तिन की निष्ठा से जोड़ें।

11(ख). कवियों के सम्बन्ध में भक्तिन की क्या मान्यता है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- भक्तिन की धारणा का आधार गद्यांश में दिया उसका कथन है।
- किसी पात्र की मान्यता बताते समय उसे लेखक का मत न बनाएँ।

चरण 1: मान्यता पहचानना भक्तिन के अनुसार कविता लिखने वाले लोग कोई उपयोगी व्यावहारिक काम नहीं करते। वे केवल गली-गली गाते-बजाते घूमते रहते हैं। लंबे बाल और अस्त-व्यस्त वेशभूषा वाले किसी व्यक्ति के कवि होने की बात सुनते ही उसके मन में ऐसी धारणा सक्रिय हो जाती है।

चरण 2: कथन से पुष्टि वह कहती है कि ऐसे लोग कुछ करेंगे-धरेंगे नहीं, बस गाते-बजाते फिरेंगे। इस कथन में कवियों के प्रति आदर के स्थान पर उपेक्षा झलकती है। गद्यांश स्पष्ट करता है कि कवि और कविता के बारे में उसका ज्ञान बढ़ा है, किंतु आदर नहीं बढ़ा। इसलिए उसका परिचय बढ़ना साहित्यिक श्रम के मूल्य को समझ लेने के समान नहीं है।

चरण 3: निष्कर्ष भक्तिन कवियों को काम-धाम से दूर, गली-गली गाने-बजाने वाले लोग मानती है; उनके प्रति उसके मन में विशेष आदर नहीं है।

त्वरित सुझाव: भक्तिन की मान्यता लिखते समय उसके गाने-बजाने और काम न करने वाले कथन को प्रमाण बनाएँ।

11(ग). 'अवज्ञा' का क्या तात्पर्य है ? भक्तिन किसके प्रति कैसे अवज्ञा व्यक्त करती है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- अवज्ञा का अर्थ यहाँ अनादर या उपेक्षा प्रकट करना है।
- शब्दार्थ के साथ पात्र, परिस्थिति और कथन बताने से उत्तर पूरा होता है।

चरण 1: अर्थ और लक्ष्य अवज्ञा का तात्पर्य अनादर, तिरस्कार अथवा सम्मान न देने से है। इस गद्यांश में भक्तिन कवियों के प्रति अवज्ञा व्यक्त करती है। किसी के लंबे बाल और अस्त-व्यस्त पहनावे को देखकर वह पूछती है कि क्या वह भी कविता लिखना जानता है। उसके कवि होने का परिचय उसे प्रभावित नहीं करता।

चरण 2: अवज्ञा व्यक्त करने का ढंग भक्तिन तुरंत कह उठती है कि वह कुछ काम-धाम नहीं करेगा, केवल गली-गली गाता-बजाता फिरेगा। इस टिप्पणी द्वारा वह कविता लिखने को उपयोगी कार्य का स्थान नहीं देती और कवि की उपेक्षा करती है। यह किसी आदेश का उल्लंघन करने का प्रसंग नहीं है; यहाँ उसके वचन से प्रकट होने वाला अनादर ही अवज्ञा है।

चरण 3: निष्कर्ष अवज्ञा का अर्थ अनादर है। भक्तिन कवियों को काम न करने और गली-गली गाने-बजाने वाला कहकर उनके प्रति अनादर व्यक्त करती है।

त्वरित सुझाव: शब्द का सामान्य अर्थ लिखने के बाद गद्यांश में भक्तिन की टिप्पणी से उसका संदर्भ स्पष्ट करें।

11(घ). आशय स्पष्ट कीजिए –
'और सद्भाव उनके प्रति मेरे सद्भाव से निश्चित होता है ।' [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- आशय स्पष्ट करते समय कथन के सर्वनामों का संदर्भ पहचानें।
- यहाँ मेरे से लेखिका और उनके से लेखिका के परिचितों का बोध होता है।

चरण 1: कथन का सीधा अर्थ इस कथन का आशय है कि लेखिका के परिचितों के प्रति भक्तिन का सद्भाव, उन परिचितों के प्रति लेखिका के सद्भाव पर निर्भर करता है। लेखिका जिस व्यक्ति के प्रति आत्मीयता और अच्छा भाव रखती हैं, भक्तिन भी उसके प्रति अपनापन दिखाती है। वह अपने व्यवहार का आधार लेखिका के संबंधों को बनाती है।

चरण 2: निहित भाव स्पष्ट करना भक्तिन लेखिका की भावनाओं को सहज रूप से पहचानकर उनके अनुरूप आचरण करती है। उसके लिए किसी परिचित की प्रतिष्ठा या वेशभूषा से अधिक महत्त्व लेखिका के साथ उसका संबंध रखता है। यह कथन लेखिका के प्रति भक्तिन की गहरी निष्ठा, आत्मीयता और उनकी भावनाओं को समझने की क्षमता प्रकट करता है। यहाँ दूसरों के लेखिका के प्रति सम्मान से अलग, लेखिका के दूसरों के प्रति सद्भाव की बात कही गई है।

चरण 3: निष्कर्ष लेखिका जिसके प्रति जितना सद्भाव रखती हैं, भक्तिन भी उसके प्रति वैसा ही आत्मीय व्यवहार करती है; यही उसकी निष्ठा और सहज समझ का संकेत है।

त्वरित सुझाव: उनके प्रति मेरे सद्भाव का अर्थ लेखिका का परिचितों के प्रति भाव है; संबंध की दिशा ध्यान से पहचानें।

अथवा

11. मैं सोचता हूँ कि पुराने की यह अधिकार-लिप्सा क्यों नहीं समय रहते सावधान हो जाती ? जरा और मृत्यु, ये दोनों ही जगत के अति परिचित और अति प्रामाणिक सत्य हैं । तुलसीदास ने अफ़सोस के साथ इनकी सच्चाई पर मुहर लगाई थी – 'धरा को प्रमान यही तुलसी जो फरा सो झरा, जो बरा सो बुताना ।' मैं शिरीष के फूलों को देखकर कहता हूँ कि क्यों नहीं फलते ही समझ लेते बाबा कि झड़ना निश्चित है । सुनता कौन है ? महाकाल देवता सपासप कोड़े चला रहे हैं, जीर्ण और दुर्बल झड़ रहे हैं, जिनमें प्राण-कण थोड़ा भी ऊर्ध्वमुखी है, वे टिक जाते हैं । दुरंत प्राणधारा और सर्वव्यापक कालाग्नि का संघर्ष निरन्तर चल रहा है । मूर्ख समझते हैं कि जहाँ बने हैं, वहीं देर तक बने रहें तो काल-देवता की आँख बचा जाएँगे । [8 अंक]

11(क). शिरीष की किस विशेषता के कारण लेखक को यह सब लिखना पड़ा है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- प्रकृति के व्यवहार के माध्यम से मनुष्य की अधिकार-लिप्सा पर व्यंग्य किया गया है।
- जीवन में परिवर्तन स्वीकार करना और नए के लिए स्थान छोड़ना आवश्यक है।

चरण 1: विशेषता पहचानिए शिरीष के पुराने फल पेड़ की डालियों पर बहुत समय तक जमे रहते हैं। नए फूल और फल आने पर भी वे अपना स्थान आसानी से नहीं छोड़ते। उनका इस प्रकार चिपके रहना लेखक को उन पुराने लोगों की याद दिलाता है जो अपनी उपयोगिता कम होने पर भी अधिकार और पद नहीं छोड़ना चाहते।

चरण 2: लेखक की प्रतिक्रिया स्पष्ट कीजिए लेखक इसी अधिकार-लिप्सा पर विचार करता है। यह प्राकृतिक दृश्य मनुष्य की जड़ता पर व्यंग्य बन जाता है। वह कहता है कि फल लगते ही यह समझ लेना चाहिए कि अंततः झड़ना निश्चित है। बुढ़ापा और मृत्यु जीवन के अनिवार्य सत्य हैं; इसलिए एक ही स्थान पर टिके रहकर परिवर्तन को रोकने का आग्रह व्यर्थ है।

चरण 3: निष्कर्ष शिरीष के पुराने फलों का डालियों पर हठपूर्वक जमे रहना और नए को स्थान न देना लेखक के इस चिंतन का कारण है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में पुराने फलों के चिपके रहने को मनुष्य की पद और अधिकार की लालसा से जोड़िए।

11(ख). मूर्ख अपना स्थान क्यों नहीं छोड़ते हैं ? उन्हें क्या समझना ज़रूरी है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- गद्यांश में स्थान न छोड़ना अधिकार के मोह और परिवर्तन से पलायन का प्रतीक है।
- जरा और मृत्यु को कोई व्यक्ति स्थिर रहकर टाल नहीं सकता।

चरण 1: स्थान न छोड़ने का कारण बताइए मूर्ख लोग अपने वर्तमान स्थान, पद या अधिकार के मोह में बँधे रहते हैं। वे मान लेते हैं कि जहाँ बने हुए हैं वहीं अधिक समय तक बने रहने से काल-देवता की दृष्टि से बच जाएँगे। इसी भ्रम और अधिकार-लिप्सा के कारण वे अपना स्थान नहीं छोड़ते।

चरण 2: आवश्यक समझ स्पष्ट कीजिए उन्हें समझना चाहिए कि जरा और मृत्यु जगत के प्रामाणिक सत्य हैं। जो फलता है उसका झड़ना और जो जलता है उसका बुझना निश्चित है। समय का प्रवाह किसी के रुकने से नहीं रुकता। इसलिए उन्हें परिवर्तन स्वीकार करके पुराने आग्रह छोड़ने और नए जीवन के लिए स्थान बनाने की आवश्यकता है।

चरण 3: निष्कर्ष मूर्ख अधिकार के मोह और काल से बच निकलने के भ्रम में स्थान नहीं छोड़ते; उन्हें परिवर्तन, जरा और मृत्यु की अनिवार्यता समझनी चाहिए।

त्वरित सुझाव: कारण में अधिकार-मोह लिखिए और सीख में समय के परिवर्तन तथा मृत्यु की अनिवार्यता बताइए।

11(ग). किस सच्चाई को उजागर करने के लिए तुलसी को उद्धृत किया गया है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- उद्धरण गद्यांश में कही गई नश्वरता की बात का समर्थन करता है।
- फलने और जलने की परिणति के उदाहरण जीवन के अनिवार्य अंत को स्पष्ट करते हैं।

चरण 1: उद्धरण का अर्थ खोलिए तुलसी की पंक्ति का आशय है कि जो फला है वह एक दिन झड़ेगा और जो जला है वह अंततः बुझ जाएगा। संसार में उत्पन्न हुई कोई अवस्था सदा एक जैसी नहीं रहती। विकास और उत्कर्ष के साथ उसके समाप्त होने की संभावना भी जुड़ी रहती है।

चरण 2: गद्यांश की सच्चाई से जोड़िए यह प्रकृति का अटल नियम है। लेखक ने इस उद्धरण से जरा और मृत्यु की अनिवार्यता को उजागर किया है। ये दोनों जगत के सर्वपरिचित और निर्विवाद सत्य हैं। कोई व्यक्ति अपने पद या स्थान से चिपककर इनके प्रभाव से नहीं बच सकता। अतः अधिकार का स्थायित्व मानने की जगह जीवन की परिवर्तनशीलता को स्वीकार करना चाहिए।

चरण 3: निष्कर्ष तुलसी को इस सत्य के समर्थन में उद्धृत किया गया है कि जो उत्पन्न हुआ है उसका अंत निश्चित है; जरा और मृत्यु से कोई नहीं बच सकता।

त्वरित सुझाव: उद्धरण का केवल शब्दार्थ न लिखिए; उसे गद्यांश के जरा और मृत्यु वाले कथन से भी जोड़िए।

11(घ). 'महाकाल देवता सपासप कोड़े चला रहे हैं' कथन से लेखक का क्या आशय है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- महाकाल समय की अजेय और निरंतर सक्रिय शक्ति का प्रतीक है।
- कोड़े चलाने का रूपक पुराने और दुर्बल के झड़ने की प्रक्रिया को तीखा बनाता है।

चरण 1: रूपक का अर्थ स्पष्ट कीजिए महाकाल देवता के कोड़े चलाने का आशय समय के निरंतर और कठोर प्रभाव से है। समय किसी की इच्छा, पद या अधिकार के कारण रुकता नहीं। उसके प्रभाव से जीर्ण और दुर्बल जीवन-रूप समाप्त होते जाते हैं, जैसे पेड़ से पुराने फल झड़ते हैं।

चरण 2: जीवन-शक्ति का संबंध समझाइए गद्यांश में कहा गया है कि जिनमें प्राण-कण थोड़ा भी ऊर्ध्वमुखी है, वे टिक जाते हैं। अर्थात जीवन की आगे बढ़ने वाली शक्ति समय की विनाशकारी प्रक्रिया से संघर्ष करती है। जड़ता से स्थान पर चिपके रहना बचाव नहीं है; सक्रिय जीवन-शक्ति ही कुछ समय तक टिकने का आधार बनती है।

चरण 3: निष्कर्ष इस कथन का आशय है कि काल निरंतर परिवर्तन ला रहा है; उसके कठोर प्रभाव से जीर्ण और दुर्बल झड़ रहे हैं तथा जीवन-शक्ति वाले संघर्ष करते हुए टिकते हैं।

त्वरित सुझाव: महाकाल को समय और कोड़ों को उसके कठोर प्रभाव का प्रतीक बताकर गद्यांश का संदर्भ दीजिए।

12(क). निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

लेखक ने अर्थशास्त्र को अनीतिशास्त्र क्यों कहा है ? उदाहरण देकर समझाइए । [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- बाज़ार की सार्थकता मनुष्य की वास्तविक आवश्यकता पूरी करने में है।
- केवल लाभ और क्रय-शक्ति को प्रधानता देने वाला व्यवहार मानवीय नीति की उपेक्षा करता है।

चरण 1: अनीतिशास्त्र कहने का कारण समझिए लेखक उस अर्थशास्त्र को अनीतिशास्त्र कहता है जो धन, लाभ और क्रय-शक्ति को ही सबसे बड़ा मानता है। ऐसे व्यापार में मनुष्य की वास्तविक आवश्यकता, संतोष और दूसरे के हित का विचार पीछे छूट जाता है। ग्राहक अपनी आवश्यकता से अधिक खरीदकर पैसे की शक्ति दिखाता है और विक्रेता उसकी कमजोरी का लाभ उठाकर अनावश्यक वस्तुएँ बेचता है। यह संबंध परस्पर सहयोग के स्थान पर लोभ और शोषण पर टिकता है।

चरण 2: पाठ से उदाहरण दीजिए पाठ के भगत जी चूरन बेचते हैं। वे निश्चित सीमित कमाई हो जाने पर शेष चूरन बच्चों को मुफ्त बाँट देते हैं। अधिक ग्राहक मिलने पर भी वे असीम लाभ के लोभ में अपना व्यवहार नहीं बदलते। प्रचलित लाभ-प्रधान अर्थशास्त्र को उनका यह संतोष समझ में नहीं आएगा, क्योंकि उसके अनुसार अधिक माँग का अर्थ अधिक कमाई का अवसर है। भगत जी का आचरण दिखाता है कि मनुष्यता और संतोष को व्यापार से अलग नहीं किया जाना चाहिए।

चरण 3: दृष्टिकोण का नैतिक परिणाम बताइए इसीलिए लेखक ऐसे अर्थशास्त्र को नीति-विरोधी मानता है जो मनुष्य को केवल खरीदने या बेचने की क्षमता से आँकता है। बाजार का सही उपयोग जरूरत की वस्तु लेना और देना है। लालच, दिखावे तथा दूसरों की निर्बलता से लाभ कमाने की प्रवृत्ति उसका मानवीय उद्देश्य नष्ट कर देती है।

चरण 4: निष्कर्ष मानवीय आवश्यकता और संतोष की उपेक्षा करके केवल अधिक लाभ तथा क्रय-शक्ति को महत्त्व देने के कारण लेखक ने अर्थशास्त्र को अनीतिशास्त्र कहा है; भगत जी का संतोषी व्यापार इसका प्रतिपक्ष है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में लाभ-प्रधान दृष्टि की आलोचना के साथ भगत जी के चूरन बेचने का ठोस उदाहरण अवश्य दीजिए।

12(ख). निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

भक्तिन नाम किसने और क्यों दिया ? पाठ के आधार पर उत्तर दीजिए । [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- पाठ में नामकरण का प्रसंग भक्तिन के वास्तविक नाम और बाहरी रूप से जुड़ा है।
- चरित्र के विषय में तथ्य लिखते समय लेखिका द्वारा दिए गए नाम और जन्मनाम का अंतर स्पष्ट रखना चाहिए।

चरण 1: नाम देने वाले का परिचय दीजिए लछमिन को भक्तिन नाम लेखिका महादेवी वर्मा ने दिया था। सेविका के रूप में उनके पास आने पर उससे नाम पूछा गया। उसने अपना नाम लछमिन बताया, किंतु साथ ही अनुरोध किया कि लेखिका उसे इस नाम से न पुकारें। इस प्रकार नया नाम रखने की आवश्यकता उसके अपने आग्रह से उत्पन्न हुई।

चरण 2: वास्तविक नाम से असंगति समझाइए लछमिन नाम लक्ष्मी से जुड़ा था, पर उसके जीवन में धन-संपत्ति और सुख-समृद्धि का अभाव था। उसके निर्धन और संघर्षपूर्ण जीवन से इस नाम का मेल नहीं बैठता था। इस असंगति के कारण वह अपने वास्तविक नाम को छिपाना चाहती थी। नाम बताने के बाद भी उसने उसे प्रयोग में न लाने का अनुरोध किया।

चरण 3: भक्तिन नाम की उपयुक्तता बताइए लेखिका ने उसकी कंठी-माला और मुँड़े हुए सिर को देखकर उसे भक्तिन नाम दिया। उसका रूप भक्त स्त्री जैसा दिखाई देता था, इसलिए यह नाम सहज और उपयुक्त लगा। पाठ में आगे वह इसी नाम से पहचानी जाती है। यह नाम उसके जन्म के समय परिवार द्वारा रखा गया नाम नहीं, बल्कि लेखिका द्वारा दिया गया संबोधन है।

चरण 4: निष्कर्ष महादेवी वर्मा ने लछमिन के अनुरोध पर उसकी कंठी-माला और मुँड़े सिर को देखकर उसे भक्तिन नाम दिया; लछमिन

अपने अभावपूर्ण जीवन से असंगत वास्तविक नाम का प्रयोग नहीं चाहती थी।

त्वरित सुझाव: पहले महादेवी वर्मा का नाम लिखिए, फिर लछमिन का अनुरोध और कंठी-माला तथा मुँड़े सिर का कारण बताइए।

12(ग). निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

सजिया के लिए नमक इतना महत्त्वपूर्ण क्यों था ? नमक लाने में किन-किन का सहयोग मिला ? [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- नमक की पुड़िया जन्मभूमि की स्मृति तथा बँटवारे से परे आत्मीयता का प्रतीक है।
- कहानी में मानवीय संवेदना राजनीतिक सीमाओं और सरकारी नियमों से अधिक व्यापक दिखाई गई है।

चरण 1: नमक के भावात्मक महत्त्व को समझना सजिया अर्थात् कहानी की सफ़िया के लिए नमक केवल खाने की वस्तु नहीं था। भारत में मिली सिख बीबी लाहौर को अपना वतन मानती थीं और उन्होंने सफ़िया से वहाँ का नमक लाने की इच्छा व्यक्त की थी। उस नमक में उनके बिछुड़े घर, पुराने जीवन और जन्मभूमि का स्वाद बसा था। उनकी यह छोटी-सी माँग पूरी करना सफ़िया के लिए उनके विश्वास तथा स्नेह का सम्मान करना था। इसलिए नमक पहुँचाना उसके लिए एक भावनात्मक दायित्व बन गया।

चरण 2: नमक लाने में मिले सहयोग का उल्लेख पाकिस्तान से भारत नमक लाना प्रतिबंधित होने के कारण कठिनाई आई। पाकिस्तानी कस्टम अधिकारी ने सफ़िया की बात और सिख बीबी की भावना समझी। उसने नमक की पुड़िया स्वयं उसके सामान में रख दी और उसे ले जाने दिया। भारतीय कस्टम अधिकारी ने भी इस आत्मीय संबंध को समझा; उसे अपना छूटा हुआ वतन ढाका याद आ गया। उसने नियम की कठोरता दिखाने के स्थान पर सहानुभूति और सहायता का व्यवहार किया। दोनों अधिकारियों के सहयोग ने उस मानवीय उपहार को सीमा पार पहुँचाना संभव किया।

चरण 3: निष्कर्ष नमक सफ़िया के लिए सिख बीबी की जन्मभूमि के प्रति लगाव और उनके अपने वचन का प्रतीक था। पाकिस्तानी तथा भारतीय कस्टम अधिकारियों की संवेदनशीलता से उसे लाने का कार्य संभव हुआ।

त्वरित सुझाव: पहले सिख बीबी की लाहौर की स्मृति बताइए, फिर दोनों कस्टम अधिकारियों के सहयोग को स्पष्ट कीजिए।

12(घ). निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

शिरीष को अवधूत क्यों कहा गया है ? [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- अवधूत वह है जो मोह, बाहरी आडंबर और सुख-दुःख के बंधनों से मुक्त होकर सहज जीवन जीता है।
- शिरीष की सहनशीलता, मस्ती और निरंतर सृजनशीलता लेखक के लिए जीवन का आदर्श हैं।

चरण 1: विपरीत परिस्थितियों में अविचल रहना शिरीष भीषण गर्मी, लू और सूखे वातावरण में भी फूलता रहता है। जब दूसरे पेड़-पौधे गरमी से व्याकुल होते हैं, तब उसके कोमल फूल वातावरण में सौंदर्य बिखेरते हैं। वह बाहरी कठिनाइयों से परास्त होकर अपनी सहज प्रसन्नता नहीं खोता। उसकी यह फक्कड़ मस्ती उस अवधूत जैसी है जो संसार के सुख-दुःख में उलझे बिना अपना जीवन जीता है।

चरण 2: अनासक्ति और जीवन-रस की साधना शिरीष प्रतिकूल वातावरण से भी जीवन का रस खींच लेता है और अपने फूलों से संसार को आनंद देता है। उसका कोमल फूल कठोर वातावरण में भी जीवन की अजेय शक्ति का परिचय देता है। वह सुविधा की प्रतीक्षा नहीं करता, किसी से शिकायत नहीं करता और विपत्ति में भी अपनी सृजनशीलता बनाए रखता है। लेखक उसकी इसी अनासक्त किंतु सक्रिय जीवन-दृष्टि की प्रशंसा करता है। अवधूत कहना उसके जड़ या निष्क्रिय होने का संकेत नहीं है; यह परिस्थितियों के दबाव से स्वतंत्र होकर सहज, उदार और आनंदमय रहने की विशेषता को रेखांकित करता है।

चरण 3: निष्कर्ष शिरीष को अवधूत इसलिए कहा गया है कि वह तपती गरमी में भी निर्लिप्त, मस्त और प्रसन्न रहकर फूलता है। कठिनाइयों के बीच जीवन-रस ग्रहण करना और दूसरों को आनंद देना उसकी अवधूत वृत्ति है।

त्वरित सुझाव: अवधूत का अर्थ बताकर शिरीष के गरमी में फूलने, अनासक्ति और फक्कड़ मस्ती से उसका संबंध जोड़िए।

12(ङ). निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

चार्ली चैप्लिन की भारत को क्या देन बताई गई है ? स्पष्ट कीजिए । [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- चार्ली का हास्य सामान्य मनुष्य की असफलताओं और करुण स्थितियों से जुड़ता है।
- अपने ऊपर हँस सकना दुख से दूरी बनाकर उसे समझने और सहने की मानवीय क्षमता है।

चरण 1: चार्ली की मुख्य देन पहचानना लेखक के अनुसार चार्ली चैप्लिन की भारत को बड़ी देन यह है कि उन्होंने हमें अपने ऊपर हँसना सिखाया। भारतीय परंपरा में दूसरों की कमजोरियों पर हँसने के अवसर तो मिलते हैं, पर अपने दुख, बेबसी और असफलता को हास्य का विषय बना लेना सहज नहीं था। चार्ली ने दिखाया कि करुण परिस्थिति में फँसा साधारण आदमी भी अपने आचरण और विडंबना से हँसी पैदा कर सकता है। इससे उसकी मानवीय गरिमा समाप्त नहीं होती, बल्कि दर्शक उससे अधिक आत्मीयता अनुभव करता है।

चरण 2: भारतीय फिल्मों में उसके प्रभाव को स्पष्ट करना चार्ली की इस दृष्टि से भारतीय सिनेमा को हास्य और करुणा को एक साथ प्रस्तुत करने की प्रेरणा मिली। राज कपूर ने विशेष रूप से साधारण, वंचित और भोले व्यक्ति के चरित्र में इस प्रभाव को अपनाया। उनका पात्र अपनी परेशानियों और गलतियों के बीच हँसता तथा हँसाता है और दर्शक उसके दुख को भी महसूस करता है। इस प्रकार चार्ली की देन केवल मनोरंजन की शैली नहीं, बल्कि स्वयं को कुछ दूरी से देखकर अपनी कमजोरियों को स्वीकार करने की दृष्टि है।

चरण 3: निष्कर्ष चार्ली ने भारत को अपने ऊपर हँसने की कला और करुणा से जुड़े हास्य की दृष्टि दी। भारतीय फिल्मों, विशेषत: राज कपूर के साधारण मनुष्य वाले पात्रों में, इसका प्रभाव दिखाई देता है।

त्वरित सुझाव: देन को केवल हास्य मत लिखिए; अपने ऊपर हँसने की क्षमता और राज कपूर के सिनेमा से उसका संबंध समझाइए।

13. यशोधर बाबू किन जीवन-मूल्यों को थामे बैठे हैं ? नई पीढ़ी उन्हें प्रासंगिक क्यों नहीं मानती ? तर्कसम्मत उत्तर दीजिए । [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- यशोधर बाबू और उनके परिवार का मतभेद पुरानी जीवन-दृष्टि तथा बदलती शहरी संस्कृति के टकराव को व्यक्त करता है।
- मूल्यों के मूल्यांकन में उनकी मानवीय उपयोगिता और बदलते समय में उनके व्यवहार, दोनों पर विचार आवश्यक है।

चरण 1: यशोधर बाबू के जीवन-मूल्य यशोधर बाबू सादगी, मितव्ययिता, ईमानदारी, कर्तव्यनिष्ठा और आत्मीय संबंधों को महत्त्व देते हैं। वे दिखावे तथा अनावश्यक खर्च से बचते हैं। पारिवारिक और सामाजिक संबंधों में बड़ों का आदर, परंपरा का निर्वाह और अपनापन उनकी दृष्टि में आवश्यक है। किशन दा उनके आदर्श हैं; उनके संपर्क से मिले संस्कार और संयुक्त पारिवारिक जीवन की स्मृतियाँ अब भी उनके आचरण का आधार हैं। वे जीवन की सफलता को केवल अधिक आय और आधुनिक वस्तुओं के संग्रह से नहीं मापते।

चरण 2: नई पीढ़ी की दृष्टि और असहमति उनके बच्चे आर्थिक उन्नति, आधुनिक रहन-सहन, व्यक्तिगत सुविधा और सामाजिक प्रतिष्ठा को प्राथमिकता देते हैं। वे अपने पिता की पुरानी आदतों तथा खर्च के प्रति संकोच को बदलते समय से कटे रहने का संकेत मानते हैं। विवाह की पच्चीसवीं वर्षगाँठ मनाने का उत्साह भी इसी अंतर को उजागर करता है। परिवार के लिए यह खुशी और आधुनिक ढंग से आयोजन का अवसर है, जबकि यशोधर बाबू उसमें सहज नहीं हो पाते। उनकी पत्नी भी नए जीवन के आकर्षणों को स्वीकार करने लगी हैं। इससे वे अपने ही परिवार में अलग-थलग अनुभव करते हैं।

चरण 3: दोनों दृष्टियों का तर्कसम्मत मूल्यांकन नई पीढ़ी को उनकी जीवन-पद्धति इसलिए अप्रासंगिक लगती है कि वह वर्तमान आवश्यकताओं और अपनी आकांक्षाओं के अनुरूप अधिक स्वतंत्र तथा सुविधापूर्ण जीवन चाहती है। यशोधर बाबू भी पुरानी कसौटियों पर हर नई बात को परखते हैं, जिससे संवाद कठिन होता है। फिर भी ईमानदारी, सादगी और संबंधों की आत्मीयता जैसे मूल्य पुराने नहीं पड़ते। आवश्यकता उनके जड़ रूप से चिपके रहने की नहीं, उन्हें नई परिस्थितियों में विवेक से अपनाने की है। कहानी किसी एक पीढ़ी को पूर्णतः गलत ठहराने के बजाय समझ और संवाद की कमी से उपजे अकेलेपन को सामने लाती है।

चरण 4: निष्कर्ष यशोधर बाबू सादगी, ईमानदारी, मितव्ययिता और संबंधों की गरिमा को थामे हैं। नई पीढ़ी उनकी पुरानी जीवन-पद्धति को अपनी आधुनिक आकांक्षाओं के अनुकूल नहीं मानती। उनके मूल मानवीय मूल्य आज भी प्रासंगिक हैं; दोनों पीढ़ियों को आग्रह छोड़कर परस्पर संवाद और समयानुकूल समन्वय करना चाहिए।

त्वरित सुझाव: उत्तर में पहले मूल्य, फिर नई पीढ़ी के असहमति के कारण और अंत में अपना संतुलित मूल्यांकन दीजिए।

14(क). टूटे-फूटे खंडहर सभ्यता और संस्कृति के इतिहास के साथ-साथ धड़कती ज़िन्दगियों के अनछुए समयों के जीवन्त दस्तावेज़ होते हैं । कैसे ? 'अतीत में दबे पाँव' पाठ के आधार पर उत्तर की पुष्टि कीजिए । [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- पुरातात्त्विक अवशेष केवल इमारतों का इतिहास नहीं बताते; उनके माध्यम से तत्कालीन लोगों के रहन-सहन, श्रम, कला और सामाजिक संबंधों को भी समझा जा सकता है।
- ओम थानवी का पाठ 'अतीत में दबे पाँव' मोहनजोदड़ो की यात्रा के सहारे उस सभ्यता के साधारण मनुष्यों के जीवन को अनुभव करने का प्रयास है।

चरण 1: खंडहरों में सुरक्षित जीवन के संकेत खंडहर देखने में भले ही निर्जीव ईंट-पत्थर हों, पर उनका विन्यास कभी वहाँ रहने वाले मनुष्यों की आवश्यकताओं और आदतों का साक्ष्य होता है। मोहनजोदड़ो की चौड़ी सड़कें, व्यवस्थित गलियाँ, मकान, कुएँ और ढकी हुई नालियाँ बताते हैं कि नगरवासी स्वच्छता, जल-व्यवस्था और नियोजित सामुदायिक जीवन के प्रति सजग थे। घरों के आँगन और स्नानघर परिवारों की दैनिक गतिविधियों का बोध कराते हैं। इस प्रकार स्थापत्य के पीछे लोगों का जीता-जागता संसार दिखाई देने लगता है।

चरण 2: साधारण मनुष्य की संस्कृति के दस्तावेज़ वहाँ से मिले मिट्टी के बर्तन, खिलौने, मुहरें, आभूषण और मूर्तियाँ तत्कालीन जीवन के अनेक पक्ष खोलते हैं। खिलौनों में बच्चों की दुनिया, आभूषणों में सौंदर्यबोध और बर्तनों में घरेलू जीवन के संकेत मिलते हैं। कांसे की नर्तकी जैसी कलाकृति कलात्मक दक्षता और जीवन के उल्लास का परिचय देती है। विशाल स्नानागार से सामूहिक जीवन और निर्माण-कौशल का अनुमान होता है। ये वस्तुएँ केवल संग्रहालय की सामग्री नहीं, उन्हें बनाने और उपयोग करने वाले अनाम मनुष्यों की उपस्थिति के चिह्न हैं।

चरण 3: पाठ की दृष्टि से कथन की पुष्टि लेखक इस सभ्यता की विशेषता उसके मानवीय रूप में देखता है। यहाँ भव्य राजप्रासादों और सत्ता के प्रदर्शन की अपेक्षा नागरिक व्यवस्था तथा सामान्य जीवन के प्रमाण अधिक ध्यान खींचते हैं। नगर की गलियों से गुजरते हुए वह बीते समय के लोगों की दिनचर्या की कल्पना करता है। यद्यपि पूरा इतिहास और लिपि के सारे रहस्य ज्ञात नहीं हैं, फिर भी अवशेष उस समय की संवेदना, सृजनशीलता और सामाजिक समझ तक पहुँचने का अवसर देते हैं। इसी अर्थ में खंडहर धड़कती जिंदगियों के अनछुए समयों के जीवंत दस्तावेज़ हैं।

चरण 4: निष्कर्ष 'अतीत में दबे पाँव' स्पष्ट करता है कि मोहनजोदड़ो के खंडहर सभ्यता के विकास के साथ सामान्य लोगों के श्रम, रुचियों, सुखों और दैनिक व्यवहारों को भी सुरक्षित रखते हैं। अतीत का जीवन इन्हीं भौतिक चिह्नों के माध्यम से वर्तमान से संवाद करता है।

त्वरित सुझाव: कथन की पुष्टि करते समय नगर-योजना, घरेलू वस्तुओं और कलाकृतियों को उनसे झलकने वाले मानवीय जीवन से जोड़कर समझाइए।

14(ख). 'जूझ' कहानी के लेखक के जीवन-संघर्ष के उन बिन्दुओं पर प्रकाश डालिए जो हमारे लिए प्रेरणादायक हैं । [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- 'जूझ' आनंद यादव के जीवन में शिक्षा पाने की तीव्र इच्छा और प्रतिकूल परिस्थितियों से संघर्ष का आत्मकथात्मक चित्रण है।
- लेखक की लगन, श्रमशीलता, आत्मविश्वास और साहित्यिक संवेदनशीलता बताती है कि अपनी प्रतिभा को विकसित करने के लिए निरंतर प्रयास आवश्यक है।

चरण 1: शिक्षा के लिए संघर्ष और व्यावहारिक प्रयास लेखक का परिवार खेती से जुड़ा था। पिता उसे पढ़ाने की अपेक्षा खेत के काम में लगाए रखना चाहते थे। लेखक स्वयं अनुभव करता था कि केवल खेती करते रहने से उसकी दशा नहीं बदलेगी और शिक्षा उसके लिए उन्नति का रास्ता खोल सकती है। उसने अपनी पढ़ाई की इच्छा को दबाया नहीं। माँ और दत्ता जी राव की सहायता से पिता को तैयार करने का प्रयास किया। यह प्रसंग हमें सिखाता है कि कठिनाई आने पर लक्ष्य छोड़ने के बजाय उपलब्ध सहयोग और समझदारी से रास्ता निकालना चाहिए।

चरण 2: श्रम और अध्ययन में संतुलन विद्यालय जाने की अनुमति मिलने पर भी लेखक को खेत के काम से छुटकारा नहीं मिला। वह सुबह खेत में काम करता, फिर विद्यालय जाता और लौटकर फिर काम सँभालता था। थकान और समय की कमी के बावजूद उसने पढ़ाई के प्रति अपनी निष्ठा बनाए रखी। विद्यालय में आरंभिक संकोच और सहपाठियों के व्यवहार का सामना करने के बाद भी वह पीछे नहीं हटा। वसंत पाटील जैसे परिश्रमी छात्र से उसे प्रेरणा मिली। यह संघर्ष बताता है कि सफलता केवल इच्छा करने से नहीं, नियमित अभ्यास, समय के सदुपयोग और कठिन परिश्रम से मिलती है।

चरण 3: संवेदनशीलता और प्रतिभा का विकास सौंदलगेकर मास्टर कविता को भावपूर्ण ढंग से पढ़ाते थे। उनके शिक्षण से लेखक को कविता की लय, ध्वनि और भावों का अनुभव हुआ तथा स्वयं कविता बनाने की प्रेरणा मिली। खेत में काम करते समय भी वह कविताएँ दोहराता और अपनी पंक्तियाँ गढ़ता था। इस प्रकार उसने श्रम के बीच भी अपनी कल्पना और रचनात्मकता को जीवित रखा। गुरु के प्रोत्साहन को उसने अभ्यास में बदला। उसकी यह विशेषता प्रेरित करती है कि आर्थिक अभाव और कठिन दिनचर्या के बीच भी ज्ञान, कला और संवेदना का विकास संभव है, यदि सीखने की आकांक्षा प्रबल हो।

चरण 4: निष्कर्ष लेखक का जीवन-संघर्ष शिक्षा के प्रति लगन, विपरीत परिस्थितियों में धैर्य, कठोर श्रम और अपनी प्रतिभा पर विश्वास की प्रेरणा देता है। उसने कठिनाइयों को स्वीकार करके निरंतर प्रयास किया और अध्ययन तथा साहित्य के लिए अपना मार्ग बनाया।

त्वरित सुझाव: प्रत्येक प्रेरक गुण के साथ पाठ का प्रसंग जोड़िए, जैसे शिक्षा के लिए दत्ता जी राव की सहायता और कविता के लिए सौंदलगेकर मास्टर की प्रेरणा।